VASUNDHARA COLLEGE OF ARTS, SCIENCE & COMMERCE, GHATNANDUR

NAAC Accredited 'B' Grade, With CGPA 2.47.

Affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

Dr. Arun Dalve
(M.A., B.Ed., Ph.D.)
Principal

Mob:9424342148
Mob:9822898727
Mob. 9923019540
Website: www.vasundharacollege.org
E-mail - principalvcg@rediffmail.Com

Ghatnandur, T.q. Ambajogai, Dist. Beed, Pin – 431519 (Maharashtra) E-mail- vasundharacollege2000@gmail.com

Outward No.VCG /20 - 20/ Date -/ /20

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during for the year 2021-2022.

Index

Sl.no	Name of teacher	Title of book	Title of chapter	ISBN number	Page No.
1	Dr. Bayaja Kotule	Dalit Chetana Ke Swar	Hindi Dalit Sahitya: vima natak Me Dalit-Vidroha	978-93-5627-066-4	3 to 7
2	Dr. Bayaja Kotule	21 Vi Sadi Our Hindi Kahaniya	Karaj Mukati Kahani Me Kisan Chetna	978-93-91119-17-1	8 to 13
3	Dr. Bayaja Kotule	21 Sadi Ka Sankraman Kalin Natya Sahitya	Wima Natak Me Vikalang Sanvedana	978-93-88130-89-9	14 to 18
4	Dr. Sanjay Khadap	2000 Nantarchi Kavita Swarup Aani Aakalan	2000 nantarche Gramin Kaviteche Badalte Swarup	978-81-953976-4-8	19 to 24
5	Asst.Assi.Prof.. Vilas Kirdant	ICT Based Library Services In COVID-19 Pandemic	Granthalayachi Corona Kalat Tantrik Padhatine Mahiti Seva	978-93-85882-65-4	25 to 35
6	Asst.Assi.Prof.. Vilas Kirdant	Present And Future Initiatives In Academic Libraries	Sadhyastithit Aadhunik Granthalay Kalachi Garaj	978-93-91712-92-1	36 to 43
7	Asst.Assi.Prof.. Vilas Kirdant	Impact Of ICT Teaching, Learning And Evaluation Process	Granthalayatil ICT Cha Wapar	978-93-85882-33-3	44 to 54

8	Dr. Sakharam Waghmare	Guru Ravidas Jivan Aani Krya	Maanvi Kalyanacha Vichar Mandanare Thor Krantikarak Guru Ravidas	978-93-94403-27-7	55 to 58

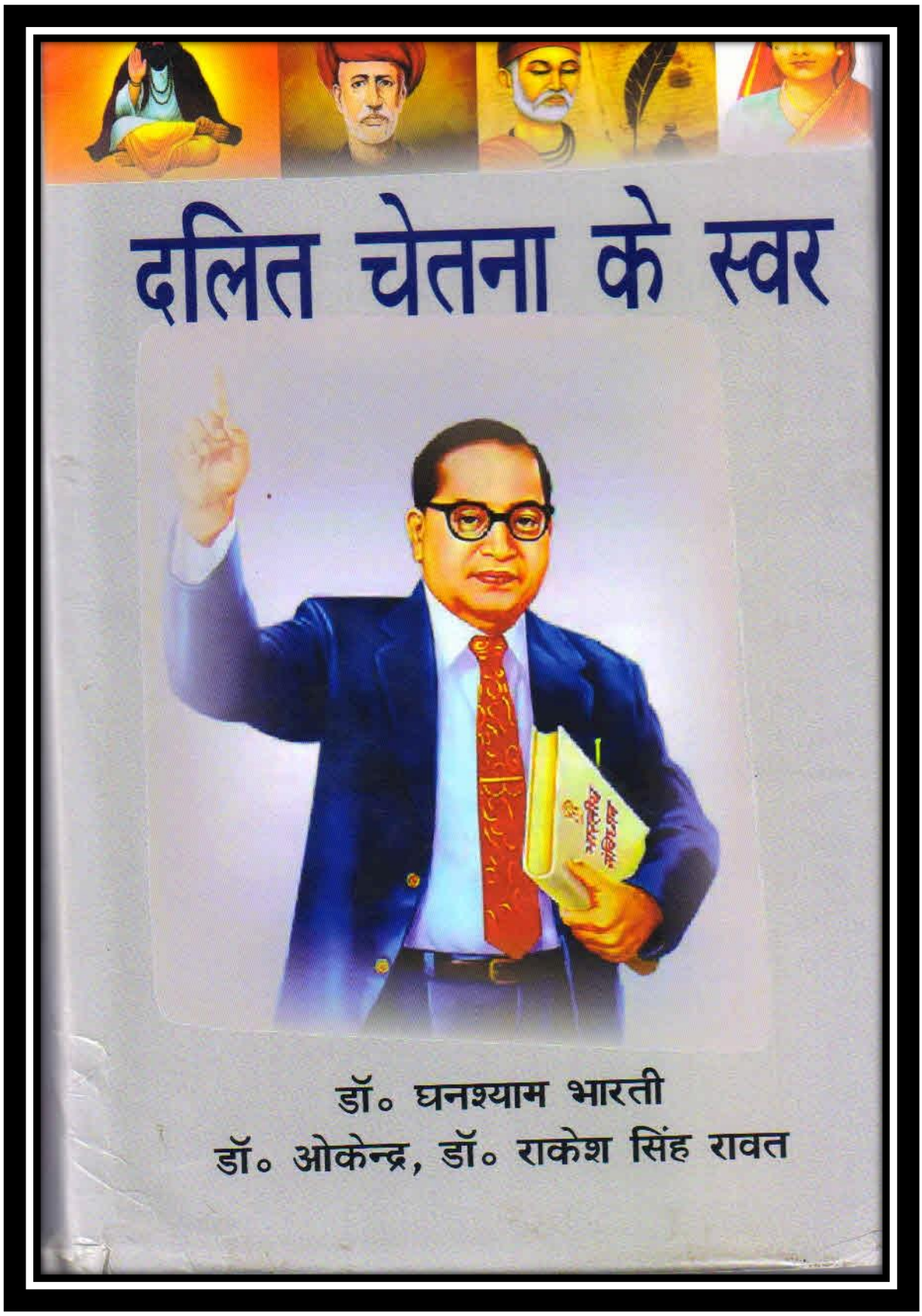

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Principal

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन : डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० राकेश सिंह रावत ५
भूमिका : डॉ० सुशीला टाकभौरे ११

१. रांगेय राघव के उपन्यासों में दलित-स्त्री के स्वर १६
डॉ० घनश्याम भारती
२. हिंदी दलित साहित्य में दलित चेतना और संवेदना के स्वर २७
डॉ० ओकेन्द, डॉ० (सुश्री) राणी बापू लोखंडे
३. दलित चेतना और संवेदना के स्वर ६७
प्रो० डॉ० गरिमा श्रीवास्तव
४. दलित अस्मिता : एक खोज ७३
डॉ० अलका सक्सेना
५. दलित समाज की वर्तमान स्थिति ७८
डॉ० शफायत अहमद
६. समकालीन हिन्दी कविता में दलित चेतना के स्वर ८५
डॉ० यशवन्त यादव
७. सोहनपाल सुमनाक्षर के काव्य में दलित चेतना १०२
डॉ० विशु मेघनानी
८. हिन्दी गजल में दलित चेतना के स्वर १०८
डॉ० जियाउर रहमान जाफरी
९. भारतीय समाज में दलितों की दशा एवं दिशा १२४
राजकुमार पहाडे
१०. हिन्दी दलित साहित्य : 'वीमा' नाटक में दलित-विद्रोह १३२
प्रा० डॉ० बायजा कोटुळे
११. हिंदी साहित्य में दलित चेतना और डॉ० बाबासाहेब अम्बेडकर १३८
डॉ० अर्चना चंद्रकांतराव पत्की
१२. दलित समाज-वर्तमान स्थिति १४३
डॉ० बड्ला श्रीनिवास राव
१३. प्रेमचन्द की कहानियों में दलित चेतना १४७
डॉ० संतोष कुमार अहिरवार
१४. दलित साहित्य में दलित चेतना १५५
डॉ० लूनेश कुमार वर्मा
१५. उदय प्रकाश की कहानियों में दलित-विमर्श १६५
प्रा० दिपाली दत्तात्रय तांबे

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

१०

हिन्दी दलित साहित्य : 'वीमा' नाटक में दलित-विद्रोह

प्रा. डॉ. बायजा कोटुळे
हिंदी विभागाध्यक्षा
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदुर, तह. अंबेजोगाई
जि. बीड, महाराष्ट्र पिन कोड–431519
ई–मेल : drbmkotule@gmail.com
मोबाइल : 9420652970

आधुनिक हिन्दी नाट्य साहित्य में विविध समस्याओं को लेकर विचार मंथन किया जा रहा है। सामाजिक समस्याओं के निदान हेतु साहित्य के नाट्य मंच पर नाटकों का मंचन हो रहा है। वर्तमान युगबोध को उजागर करने के लिए नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा बन गयी है। इस दृष्टि से 'रत्नकुमार सांभरिया' द्वारा लिखित 'वीमा' 2012 में प्रकाशित 80 पृष्ठों का नाटक है। नाटक में बारह दृश्य हैं। इस दलित नाटक का आधार संवर्ण–पूँजीवादी व्यवस्था के विरूद्ध 'विद्रोह' है। नाटक की शुरूआत से अंत तक दलित जीवन संघर्श का स्वर गूँज उठता है। जो नाटक के माध्यम से सत्तावर्ग के दमन एवं शोशण के खिलाप दलित वर्ग की आवाज बुलंद होती है। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक शोशण के विरूद्ध दलित जीवन संघर्श का स्वर गूँज उठता है। रत्नकुमार सांभरिया ने 'वीमा' नाटक के माध्यम से दलितों पर होने वाले शोशण के विविध आयामों को दर्शाया गया है।

'वीमा' नाटक में नैत्रहीन जमन वर्मा दलित है तो नैत्रहीन उसकी पत्नी नैत्रहीन वीमा सवर्ण जमींदार की लड़की है। नाटक में दलित होने का खामियाजा जमन वर्मा को भुगतना पड़ता है। अपनी पूरी सच्चाई के साथ आपसी सहमती से जमन वर्मा और वीमा का

विवाह हुआ था। किन्तु कथावस्तु में मोड़ तब आता है जब जमींदार पिता द्वारा वीमा को जमन वर्मा को बीना बताये घर लेकर जाता है। जब वीमा की खोज करता है तब पता चलता हैं कि वीमा को जबरन ले जाया गया है। वह इसका विरोध करता है। क्योंकि जमन वर्मा अपनी पत्नी वीमा से बहुत प्रेम हैं इसीलिए वह उसे किसी भी हालात में पाना चाहता है।

नाटक में कैलशबैक शैली का प्रयोग नाटककार ने किया है। नाटक की नायिका वीमा सवर्ण जमींदार की लडकी है। उसे दो भाई है, उसकी माँ की मृत्यू हो चुकी है। वीमा घर पर जो जो बनता है, वह काम करती है। जमींदार पिता अपनी नैत्रहीन बेटी की शादी एक अधेड़ उम्र वाले आदमी से जो जमींदार है उससे करवाना चाहता है। किन्तु वीमा इसका विरोध करती है और मौका मिलते ही घर से भागकर शहर पहुँचती है। वीमा, "हमारा खाना–पीना, नामी–गिरामी घर है। जमीन है। जायदाद है। माँ नहीं है। तो क्या! बाप है। दो भाई हैं। दोनों सर्विस में हैं। दो भावजे हैं। एक टीचर है। दूसरी घर संभालती है। दो रोटियों के लिए घर–परिवार में हाथी का पेट बन गई, मैं, आँखें नहीं है तो क्या? जितना बनता करती। बर्तन–भांडे धोना, बच्चों को नहलाना–धुलाना स्कूल भेजना।" "मेरी शादी एक अधेड़ से करना चाहते थे।" इससे स्पश्ट होता है कि वीमा नैत्रहीन होने के कारण उसके साथ इस तरह का व्यवहार किया जाता है।

अकेली बेसहारा नैत्रहीन जवान वीमा को देखकर एक गुण्डा उसे स्टेशन के पास एक गड्डे में ले जाकर अवसर का लाभ उठाना चाहता है। पर उस की चीख सूनकर जमन उस गुण्डे को पत्थर मार कर भगा देता है और वीमा को बचाता है। जमन वीमा को अपने साथ लेकर आता है और नैत्रहीन संस्था के चालक श्यामाजी से मिलाता है श्यामाजी वीमा को देखकर उसे अपने साथ रखने के लिए कहता है। जमन वीमा को अपने कमरे लेकर आता है। और तीन दिन से भूखी वीमा को बाहर से भोजन लाकर खिलाता है। रात में जब वे एक ही बिस्तर पर सोते हैं तो इंसानियत और नैतिकता का पालन जमन करता

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

है, इससे वीमा प्रभावित होती है, और विवाह का संकेत देती है। दोनों श्यामजी के अनुमति से विवाह करते है, विवाह से पहले जमन अपनी दलित होने की सच्चाई वीमा को बताता है। वीमा तो जात–पात से उपर हैं। जमन, "तुम ऊँची जात। मैं नीचि जात। तुम सवर्ण हो मैं दलित हूँ। मन में ऊँच–नीच का भेद रहते गृहस्थी की गाड़ी नहीं चलती।"[3] वीमा "छोड़ो भी जमन! इतने पढ़े–लिखे होकर भी जात की काप में पांव मार रहे हो। तुम मर्द हो, मैं औरत हूँ– दो जात, तुम नैत्रहीन, मैं नैत्रहीन– एक जात।"[4] विवाह होने के बाद वीमा चार माह के पेट से है, तब उसके पिता और भाई आकर उसे जबरदस्ती से अपने साथ लेकर चले जाते है। जमन शामाजी के पास जाकर वीमा की बात कहता है, किन्तु श्यामाजी उसे सामूहिक विवाह में किसी दूसरी लडकी से विवाह और पॉच सौ रूपये वेतन बढाने की बात कहता है। उन्हीकी शब्दों, 'निःशक्तों के सामूहिक विवाह के लिए हमने आवेदन आमंत्रित किए है। तुम भी अपनी अर्जी लगादो, हाँ, जाति के कॉलम में अपनी जाति जरूर लिख देना, साफ–साफ।'

'वह जमींदार, तुम फाकामारा। वह सिर, तुम चरण। शर्म आनी चाहिए तूम्हें।' "तुमने जात छुपाकर शादी कर ली बेचारी से कि दलित से सवर्ण बन जाऊँ।"[5]

वह तलाक के कागजात पर हस्ताक्षर करने के लिए कहता है जब जमन नहीं मानता तो श्यामाजी उसे जाति छुपाने का आरोप लगाता है। और उसे स्कूल से निकाल देता है। लेकिन जमन डरता नहीं। वह निडर होकर स्पष्ट कहता है, "मैं नैत्रहीन हूँ कायर नहीं। वीमा की खातिर मरने से भी नहीं डरूंगा मैं। .... वीमा को चौथा महीना है। अगर मेरी बीवी और होने वाले बच्चों के साथ कुछ हो गया तो कटघरे में होंगे आप।"[6] स्कूल से निकाल ने के बाद व निःशक्तजनों के आका के पास जाता है। किन्तु वह भी शामाजी की बोलती बोलता हुआ दिखाई देता है। "हम सालों–साल, उम्रभर, बिना धर्मो जी सकते हैं, बिना जात एक पल भी नहीं रह सकते। पक्षी भी अपनी हैसियत के मुताबिक ही पंख फड़फड़ाता है, उड़ता है। तुमने अपनी औकात का अतिकमण किया है वर्मा।"[7] जमन "आप इतने बड़े पद पर होकर भी

जात जी रहे हैं? बड़े होकर छोटे विचार रखते है?" प्रेम के पौधे पर जात की कुल्हाड़ी मार रहे हैं आप। जो श्यामाजी कह रहे थे वही आप कह रहे है' 'ये जो आका है ना, दो मुँह है। उनका अपने चहेते चाहिए। ऐसे वफादार जो पैर चाटते रहे और पूँछ हिलाते रहें। निःशक्तों की पीड़ा से उनका दुर–दुर तक कोई लेना–देना नहीं है।"[8] जमन किसी भी हालात में अपनी पत्नी को पाना चाहता है।

जमन ऑटोरिक्शा में सवार होकर अपना मित्र देवतसिंह के पास आता है। देवत को सब कहानी बताता है। देवत सिंह के साहस एवं विश्वास को बढ़ाते हुए पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करने की बात करता है। दोनों पुलिस थाने में जाकर शिकायत दर्ज करते है। किन्तु बाद में पता चलता है कि थानेदार ने एफ.आई.आर. दर्ज करवाकर ली ही नहीं वह तो वैसे ही टेबल पर पड़ी है। देवतसिंह अपने परिचित शहर के प्रतिष्ठित अखबार 'दैनिक बाज' के संवाददाता चमक चन्द्र झा को बुलाकर उसे वीमा के अपहरण श्यामाजी आका, जमींदार पिता, भाई, थानेदार के व्यवहार के बारे में बताता है। पत्रकार भी उन्हें अपने समाचार पत्र के माध्यम से न्याय देने की बात करता हुआ चला जाता है। और श्यामाजी से मिलता है। वह वीमा का अपहरण, जमन वर्मा को नौकरी से निकालना, जाति–भेद आदि का कारण पूछता है। श्यामजी पत्रकार झा के कारण अपने भविष्य को संकट में पाता है इसीलिए पहले वह उसे जाति का प्रलोभन देता है।" नीची जात होकर भी उसने बडे जात की लडकी से शादी की है। यह धर्मघात है। जात को मात है। बेटे झा, यह जात–पात, छुआछुत ही हमारी सॉसे हैं। जात मरी, हम बदंर हुए।"[9] स्पष्ट है कि, इक्कीसवीं सदी में भी लोक जात, धर्म को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। जब झा जाति के प्रलोभन से नहीं मानता तब वह पैसों के प्रलोभन से खरीद लेता हैं। पत्रकार झा श्यामाजी के अनुसार दूसरे दिन खबर दैनिक बाज में छाप देता है। वर्मा को न्याय देणे के बजाय उसे ही गलत साबित करते हुए श्यामाजी को सही साबित करता है।

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

दुबारा जब जमन और देवतसिंह थाने जाते हैं तब थानेदार समाचार पत्र में छपी बात को लेकर उन्हें ही डराता हैं। जमन के पास यह एक ही मौका था। जिस कारण वह वीमा को पा सके वह श्यामजी निःशक्तजनों के आका, थानेदार, पत्रकार के पास जाता है लेकिन वह चहुँ और से अपने आपको असफल ही पाता है। किन्तु उसका मित्र देवत सिंह चौहान उसमें साहस, आशा, विश्वास को जगाता है। वह कहता है, "निःशक्त अपनी पर उतर आए तो लोहे की गेंद हैं। लोहे की गेंद को न किक मारी जा सकती है न उसे उछाला जा सकता है।"[10] जमन वर्मा देवतसिंह और अन्य उन्हीं के बिरादारी के लोग मिलकर निःशक्तजनों के आका के कार्यालय के सामने धरना देते हैं। जमन एक पैर पर खड़ा हो जाता है, पैर के निचे श्यामाजी का गमछा दबाया है। आका को कार्यालय में जाने नहीं देते, इसी खींचतानी में आका की धोती निकल जाती है और वह जमन के पैर के नीचे रखी जाती है। यह खबर सारे शहर के अखबारों फैलती है। यह खबर सुनकर सभी आस–पड़ोस के लोग उस धरने में शामिल हो जाते हैं। इसका प्रभाव इतना पड़ता है कि डर के मारे 'वीमा' को जमन को लौटा दी जाती है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि एक और पति की पत्नी को पुनः पाने का साहस, वीरतापूर्ण संघर्ष पूरा होता है। तो दूसरी और जाति पर इंसानियत की जीत होती है। साथ ही दलितों का एकजूट होकर विद्रोह करने पर जीत उन्हीं की होती है और नेताओं, थानेदार, पत्रकारों की दोगली नीति की भी पोल खोलता है। यह नाटक और वैवाहिक जीवन में बाधा उपस्थित करता जाति–भेद निःशक्तों के रक्षक कहलाने वाले नेता का दोहरा रूप, बिकाउ पत्रकार, दबाव में काम करने वाले पुलिस व्यवस्था, जाति–भेद का शिकार अध्यापक विद्रोह करके अपनी पत्नी को पाता है। इन सभी बातों का नाटककार रत्नकुमार संभारिया ने बड़ी ही खूबीसूरती से चित्रित किया है। साथ ही पात्रों की भरमार नकारते हुए कम पात्रों को लेकर कथा वस्तु को न्याय देने काम किया है। जाति भेद के वर्तमान समय का भयंकर जहर की समस्या का चित्रण करते हुए नाटक को 'विकलांग–विमर्श' से जोड़कर नया मोड़ देने का काम किया है।

संदर्भ संकेत :

१. वीमा, रत्नकुमार सांभरिया, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–40
२. वही पृष्ठ–40
३. वही पृष्ठ–45
४. वही पृष्ठ–45
५. वही पृष्ठ–19
६. वही पृष्ठ–21–22
७. वही पृष्ठ–31
८. वही पृष्ठ–52
९. वही पृष्ठ–66
१०. वही पृष्ठ–77

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

12. हिंदी दलित कहानियों में व्यक्त आत्म संघर्ष
डॉ. हुमनाबादे विरनाथ पांडुरंग 58
13. आदिवासी कहानी लेखन की प्रवृत्ति
प्रा. डॉ. मनोहर भंडारे 62
14. 'तारपा' : एक विश्लेषण
ज्योति ज्ञानेश्वरी 69
15. हिन्दी कहानियों में दलित विमर्श
प्रा. डॉ. सादीकअली हबीबसाब शेख 72
16. शीर्षक का अन्य कहानी तत्त्वों से संबंध
प्रा. प्रकाश बन्सीधर खुळे 77
प्रा. भाउसाहेब नळे
17. 21 वी सदी के कहानियों में समता, स्वातंत्र्य और बंधुता
संतोष बनकर 81
18. 21वी सदी के हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श
डॉ. कुमार बनसोडे 85
19. 21वीं सदी की सशक्त महिला कथाकार डॉ. निशा नन्दिनी
प्रा. डॉ. शंकर रामभाऊ पजई 89
20. 'कर्जमुक्ती' कहानी में किसान चेतना
प्रा. डॉ. कोटुळे वायजा 93
21. उदय प्रकाश की कहानियों में स्त्री संघर्ष
शिल्पा दत्त 99

1
21वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श

प्रा. डॉ. बालिका रामराव कांबले

हमारे पूरे समाज का ताना बाना स्त्री और पुरुष इन्हीं दोनों के इर्द–गिर्द घूमता रहता है। मानों इन्हीं से ही सम्पूर्ण समाज का अस्तित्व हो। परन्तु इन पूर्ण पुरुष एवं पूर्ण स्त्री के मध्य एक अपूर्ण एवं उपेक्षित वर्ग भी विद्यमान है। समाज के अन्य वर्गों के मध्य अपनी पहचान, उपस्थिति एवं अपने अस्तित्व के लिए लगातार संघर्ष करता हुआ इस स्त्री पुरुष केन्द्रित समाज के नजरिये में परिवर्तन लाने की जद्दोजहद करता हुआ यह वर्ग है उभयलिंगी समुदाय का जिन्हें साधारण शब्दों में हिजड़ा कहा जाता है। किन्नर समाज अपने अधिकारों के लिए कभी स्वयं से,कभी समाज तो कभी कानून से भी दो–दो हाथ करता है, जिसमें उसे कभी सफलता तो कभी असफलता, कभी निराशा तो कभी सफल होने की आशा में वह लड़ता रहता है। अपनी अपूर्णता के दर्द को तिल–तिल सहते ये किन्नर कभी समाज में अपने हक के लिए तो कभी अपने वजूद की पूर्णता के लिए कभी निज से तो कभी समाज से लड़ते पाए जाते हैं।

सामाजिक पूर्वाग्रह से युक्त हमारा तथा–कथित समाज इस प्रजाति को हेय और घृणित दृष्टि से देखता है। ऐसे कई अवसर आते हैं, जब उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता है। चाहे विद्यालय हो, प्रशिक्षण संस्थान हो या फिर नौकरी देने की बात हो, उनके साथ उपेक्षित व्यवहार किया जाता है। हमारे गरिमामय भारतीय संविधान में इस बात का साफ–साफ उल्लेख है कि जाति, धर्म, लिंग के आधार पर नागरिकों के साथ भेदभाव नहीं किया जाएगा। लेकिन फिर भी इन लोगों के साथ यह भेदभाव क्यों किया जाता है।

किन्नर समाज के लोगों को समाज में उचित स्थान दिलाने हेतु इनकी समस्याओं और स्थिति आदि पर गंभीरता से चर्चा एवं जनमानस में इनसे सम्बन्धी चेतना विकसित किये जाने की आवश्यकता है जिसका

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

संत गाडगेबाबा अमरावती विश्वविद्यालय अमरावती के पाठयक्रम में लग चुकी है। हाल ही में उनकी रचना 'देखो सूरज' का चौधरी चरणसिंग विश्वविद्यालय मेरठ में पाठयक्रम के लिए चयन हो गया है।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य को योगदान देनेवाली 21वी सदी की सशक्त महिला कहानीकार डॉ. निशा नन्दिनी भारतीय का साहित्य भारतीयता, भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता से भरा हुआ है। जिसके कारण कई छात्र उनके साहित्य पर शोधकार्य कर रहे है।

संदर्भ

1. डॉ. निशा नन्दिनी जीवन –परिचय
2. डॉ. निशा नन्दिनी की 57 पुस्तके

सहयोगी प्राध्यापक हिंदी विभाग,
तोष्णीवाल महाविद्यालय, सेनगांव
मो.नं. 9850265069
Email : pajaishankar@gmail.com

20

'कर्जमुक्ती' कहानी में किसान चेतना

प्रा. डॉ. कोटुळे वायजा

पूरे विश्व का पालन पोषण जो करता है वह किसान है। इसीलिए तो भारत को कृषिप्रधान देश कहा जाता है। 70 प्रतिशत से अधिक लोग खेती करते है। फिर भी उन्हीं लोगों को बहुत बार भूखे रहना पड़ता है। क्योंकि प्रकति किसानों का कभी साथ नही देती। कभी सुखा अकाल तो कभी गिला अकाल के कारण किसानो की दयनीय स्थिति हो जाती है जिसके कारण किसान को मौत को अपने गले लगाना पड़ता है। कभी बहुत बारिश के होने से तो कभी सुखे के कारण फसल बरबाद हो जाने सेखाद और बीज के पैसे तक चुका नहीं पाता है। तो कभी फसल अच्छी आई तो भी उसके अनाज के लिए अच्छा खरीददार नहीं मिलता, मिला भी तो बहुत कम पैसों से खरीदता है।

बंजर जमीन को भी किसान अपनी कठोर मेहनत से बेहतरीन उपजाऊ जमीन में बदलता है। इसके लिए कुछ लोग सरकार से ही नहीं बल्कि अपने नजदीकी रिश्तेदारों से भी कुछ विशेष सहायता की अपेक्षा नहीं रखते। हम देखते है कि खाद और बीज का व्यवसाय ऐसे लोग करते है जो खेती का और उनका दूरदूर तक का सम्बन्ध नहीं होता है। कनिष्ठ व्यवसायिकों के पास खाद और बीज नकली भी होते है। ऐसी साजिशे ऐसे बड़े–बड़े परिवार के व्यावसायिकों की होती है। किसान वर्ग को ऐसी कई साजिशों का सामना करना पड़ता है। किसान समस्त राष्ट्र का अनाज निर्माता है। इसलिए किसान की प्रगति से ही देश की प्रगति देश का विकास संभव होगा। वर्तमान में किसान वर्ग की स्थिति में सुधार और उन्नति बहुत महत्वपूर्ण है।

हिन्दी उपन्यास कि ओर देखा जाय तो प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास साहित्य में किसानों की स्थिति का, समस्या का चित्रण न के बराबर हुआ है। क्योंकि हिन्दी लेखकों का ध्यान किसान की ओर गया ही नहीं। किसान के जीवनपर अत्यंत आस्था और करुणा के साथ गंभीरता से लिखनेवाले

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431517

हिन्दी साहित्य के प्रसिध्द लेखक मुन्शी प्रेमचंद जी ही है। जिन्होंने अपनी अनेक कहानियाँ और उपन्यासों में अत्यंत सुक्ष्मता से किसान के जीवन की विभिन्न समस्याओं को प्रस्तुत किया है। उनका 'गोदान' उपन्यास अत्यंत लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। उनके बाद शिवमुर्ति जी व्दारा लिखित उपन्यास 'आखिरी' छलांग और संजीव जी व्दारा लिखित 'फॉस' उपन्यास की लोकप्रियता भी शिखर की चोटी तक पहुच चुका है। जगदीशचंद्र हिन्दी साहित्य में किसान से जुडे हुए अनेक प्रश्न, समस्याएँ उसके सपने संघर्ष उसके सामने खडी होनेवाली चुनौतियाँ, बेकारी, बेरोजगारी, मीडिया, विज्ञापन इन सबके बीच कचोटता हुआ भारतीय, किसान, उसकी व्यथा, आदि अनेक पहलुओं को केंद्र में रखकर यह उपन्यास लिखे है। मनोरंजन में डूबों देनेवाले उपन्यास साहित्य से बाहर निकलाकर प्रेमचंदजीने समस्याप्रधान उपन्यासो के साथ पाठक को जोडने का मौलिक कार्य किया है। और यही मौलिक कार्य हिन्दी साहित्य जगत में ख्यातनाम लेखक संजीव जी कर रहे है।

हिन्दी उपन्यास के समान हिन्दी कहानियों ने भी किसान के जीवन संघर्ष को अभिव्यक्त करने का कार्य हिन्दी रचनाकारोने किया है। सबसे पहले 'सरस्वती नामक' साहित्यिक पत्रिका में किसान के जीवन से जुडी एकाद दुसरी कहानी लिखी जाती थी। सन 1934 में प्रकाशित श्रीनाथ सिंहजी व्दारा लिखित 'गरिबों का स्वर्ग' में कुछ हद तक किसान की त्रासदी, गरीबी, ग्रामीन जन–जीवन, खेती–बाड़ी का चित्रण मिलता है। उसी प्रकार सन 1929 के आसपास बैचेन शर्मा उग्र जी ने 'अभागा किसान नामक कहानी लिखी थी। उस समय से लेकर आज तक का विचार किया जाए तो सबकुछ बदला–बदला सा दिखाई देता है। किसान विमर्श पर बहुत ही कम कहानियाँ पढ़ने को मिलती है। किसानों के बाल–बच्चों का भविष्य, किसानो की महिलाएँ आदि की त्रासदी को कुछ रचनाकार व्यक्त करते है। कृष्णकांत जी की कहानी 'मुआवजा' में शहर छोडकर गाँव में आकर खेती करने के लिए प्रेरित करना, किसान चेतना नही तो ओर क्या है? उसी प्रकार भारतीय किसानो के दुःख, दर्द, पीडा उपेक्षा आदि का सुक्ष्म चित्रण कुछ कहानियों में मिलता है। इतना ही नहीं तो मराठी की कुछ हिन्दी अनुदित कहानियों में भी इस तरह का चित्रण देखने को मिलता है।

मराठी साहित्य के प्रसिध्द लेखक रा.रं. बोराडे जी की कहानी 'कर्जमुक्ति' जो हिन्दी साहित्य में अनुदित की है। जिसमें किसान कीचेतना देखने को मिलती है। रा.रं.बोराडे मराठी साहित्य जगत के ख्यातनाम लेखक है। कहानी, उपन्यास तथा नाटक विधाओं में उनका योगदान रहा है। पेरणी, ताळमेळ, मळणी, वाळवण, राखण, खोळंबा, नातीगोती, कणसं आणि कडबा

आदि कहानी संकलन प्रसिध्द है। पांचोळा, सावट, चारापाणी, आमदार, सौभाग्यवती, रहाट पाळणी आदि उपन्यास लिखे है तो पिकलं पान, विहिर, आमदार सौभाग्यवती आदि नाटक प्रकाशित है।

रा.रं. बोराडे द्वारा लिखित कहानी 'कर्जमुक्ति में' किसान चेतना देखने को मिलती है। वैश्वीकरण, नागरीकरण, औद्योगिकीकरण, संगणकीकरण के वर्तमान काल में भी किसान की स्थिति उसके सपने का चित्रण लेखक ने प्रस्तुत कहानी में किया है। इस कहानी का नायक परबतराव है। इस वर्ष उनके गांव में भयानक सुखा पड़ा है। गांव का हर एक कुआँ सुख गया है। परबतराव का कुआँ भी सुख गया है। इसलिए परबतराव ने बैकं से दस हजार रुपये का कर्जा लेकर कुएँ की चटटान तोडने का काम दस पन्द्रह दिनों से ब्लस्टिंग मशीन से सुख किया था। लेकिन पानी का कही आता–पता नहीं था। परबतराव चितीत हो रहे थे कि कही बँक का कर्जा बेकार न जाए। लेकिन अचानक कुएँ में पानी आ जाता है। कुएँ का पानी देखकर परबतराव बेहद खुश होते है। जगन कहता है, "अन्ना, गाँव में प्रसाद बाँटो ... भगवान ने तुम्हे प्रसाद दिया है।"[1]

इससे स्पष्ट होता है कि गाँववाले भी बहुत खुश होते हैं। परबतराव ने पाँच एकड़ गन्ने की फसल लगाई थी। सूखे के कारण वह गन्ने की खेती सुख रही थी। और उस गन्ने के भरोसे ही। इस साल बड़ी बेटी की शादी करने वाले हैं। परबतराव गदगद होकर कहते है, तुम्हारे मुँह में घी शक्कर। इस कुएँ के भरोसे ही बड़ी बेटी का ब्याह तय किया है। परबतराव का कुआँ पानी से लबालब भर जाए और उनकी बेटी का ब्याह बड़े ठाट–बाट से हो ऐसा सभी मजदूर मन ही मन दुआ कर करते है। कुएँ में इतना पानी आता है कि पानी निकालने के लिए इलेक्ट्रीकल मोटार लगानी पड़ी है। परबतराव ने दखा की इतने पाणी से तो पाँच एकर खेती की सिंचाई बड़ी आसानी से हो जाएगी। उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। इस खुशी में वह घर पहूँचते है। यह खुशी का समाचार पत्नी को देने के लिए आतुर था। पत्नी कहती है, "अपने कुएँ में पानी आ गया।"[2]

अपनी बेटी की ओर देखते हुए परबतराव ने कहा, "बहुत तो नहीं लेकिन अपनी सुभा के हाथ पीले करने को काफी होगा।" इससे स्पष्ट होता है कि एक गरीब किसान के कितने सपने होते है, वह सपने पुरे करने के लिए उन्हें अपना पूरा जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

इस वर्ष भयानक सूखा होने के कारण गाँव में पानी नहीं है। परबतराव मन ही मन सोचते है कि कल से टैंकर की राह न देखकर कुएँ से ही पानी घर ले आएँगे। एक दिन दोपहर की धुप कम होने पर परबतराव पानी की

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

मोटार चलाकर गन्ने की खेती सींचने की तैयारी में थे कि उनके सामने जीप आकर खड़ी हुई। जीप से पटवारी उतरा और बाद में बी.डी.ओ. और तहसिलदार। तहसिलदार दाभाडे ने कुएँ का मुआयना करते हुए पूछा 'यह कुआँ तुम्हारा है?' जी साब परतबतराव ने कहा। दाभाड़े और बी.डी.ओ. भालेराव ने कुएँ का मुआयना किया और गाँव कि और देखते हुए आपस में अंग्रेजी में कुछ बोले। परबतराव की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। दाभाडे ने परबतराव से पुछा "तुम्हारी पानी की मोटर कितने हॉर्सपावर की है? जी, तीन। परबतराव ने कहा। 'दिनभर में मोटर कितने घंटे चलती है?' 'दो ढाई घंटे साब'।

परबतराव को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उसने बड़ी विनम्रता से हाथ जोडते हुए कहा, 'क्या हुआ साब मुझ गरीब से कोई गलती हुई?' दाभाडे ने कहा, तुम्हारे गाँव में पानी की भारी किल्लत है, इसीलिए तुम्हारा कुआँ हम सरकारी कब्जे में लेना चाह रहे है। उससे गाँव को पीने का पानी मिलेगा। परतबराव तिलामिला उठते है। यानी मेरे कुएँ का सारा पानी गाँव के कुएँ में जाएँगा? फिर मेरा गन्ना? वह तो पुरा सुख जाएगा। बी.डी.ओ. कहते है मनुष्य महत्वपूर्ण है या तुम्हारा गन्ना? तहसीलदार भी कहता है। "हम यह सब तुम्हारे ही गाँव के लिए कर रहे है न? अपने गाँव के लिए तुम इतना भी नहीं करोंगे?" परबतराव ने बडे स्पष्ट शब्दों में कहा, फिलहाल मेरी भी हालत खस्ता है, ऐसे में मैं अपना कुआँ सरकार को नहीं दूंगा। लेकिन दाभाडे उसे कानून शिकाता है और कहता है कि, "जिस गाँव में पानी की किल्लत होती है उस गाँव का कोई भी कुआँ सरकार अपने कब्जे में ले सकती है। परबतराव परेशान होता है, और कहता है कि आप मेरा कुआँ मुक्त में ले लेंगे। 'हाँ... बिलकुल'। लेकिन हम ऐसा नहीं करेंगे। 'पहले कुएँ केपानी का मोल भाव तय करेंगे। जो तय होगा, वही तुम्हे मिलेगा।'

हाथ जोड़कर मिन्नते करते हुए कहता है साब, इतना जुलुम मत करो। मेरा पूरा गुन्ना सुख जाएगा। बैंक का दस हजार का कर्जा इस कुएँ के लिए लिया है, इस साल मेरी बड़ी बेटी को भी मुझे ब्याहना है। 'मेरा कुआँ अपने लिया, तो मैं क्या करूँगा?' बैंक का कर्जा सिर पर है, कैसे चुकाऊँगा? साब दया करो, मेरा कुआँ मत लो। परबतराव उनसे बहुत मिनते करत है। बबनराव का कुआँ लेने के लिए कहता है क्योंकि वह बड़ा आदमी है। दाभाडे ने कहा मैं कलेक्टर साहब को लिखूँगा... उनके ऑर्डर आने पर आगे देखा जाएगा और वहाँ से चले जाते है। एक सप्ताह बीत गया। अचनाक एक दिन कुएँ पर कब्जे की सरकारी नोटिस आ धमकी। उसके साथ ही सीमेंट के पाइप और पाइपलाईन खोदनेवाले मजूदर भी आ गए।

परबतराव तहसील जाकर हाथ जोड़कर आर्त–भाव से कहते है, "साहब, कुछ भी करो लेकिन मेरा कुआँ मत छीनो? मैं हाथ जोड़ता हूँ, पैर पड़ता हूँ, मेरी पूरी खेती बरबाद हो जाएगी ... कर्ज के बोझ से मैं मर जाउँगा।"परबतराव ने लाख मिन्नते की लेकिन उसका कोई असर नहीं हुआ। अत में परबतराव कहता है कम से कम सरकार या गाँववालो से मेरा कर्जा तो चुकवाओं। दाभाडे ने कहा, नहीं हो सकता कर्जा तो तुमने लिया है तो तुम्ही को चुकाना पडेगा। इतना कर सकता हूँ की 'तुम्हारे कुएँ केपानी के ज्यादा से ज्यादा दाम दिलाने की कोशिश करता हूँ।'

दाभाडे के कहने से परबतराव पिछले दो महिनों से तहसील ऑफिस के चक्कर काट रहे है। सरकार ने उनके कुएँ पर कब्जाकर लिया है। पानी के दाम पाने के लिए वे पयत्न कर रहे है, लेकिन अब तक उन्हे दाम नहीं मिला है। उनका गन्ना सूख गया है, कुएँ का कर्जा चुकाने की क्षमता उनमें नहीं बची है। कर्जा बढ़ता ही जा रहा है। इस कर्ज से मुक्ति कैसे मिलेगी, यही चिन्ता उन्हे खाई जा रही है। स्वतंत्र के बाद की जो स्थिति किसान की थी यही स्थिति आज भी देखने को मिलती है। सिर्फ शोषण के जरिए बदल गये है। यही इस कहानी से स्पष्ट होता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि, भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि और किसान है। किसानों की उन्नति से ही देश की उन्नति संभव है। वैश्वीकरण के दौर में उसकी स्थिति उपर्युक्त कहानी से स्पष्ट होती है। कर्ज कीसमस्या से वह घिरा हुआ है, पानी की समस्याएँ उसे परेशान कर रही है। उसका कई आयामों पर शोषण हो रहा है। आजादी के पहले शोषकों को किसान समझ सकता था। लेकिन आज उसकी चालाकी से शोषण किया जा रहा है। इससे शोषकों को पहचानना भी मुश्किल हुआ है। आजादी के इतने साल बीत जाने पर भी किसानों को न्याय नहीं मिल पा रहा है। वह समस्याओं के जाल में गिरता ही जा रहा कभी प्राकृतिक आपदाए तो कभी सरकारी नीतियों से वह परेशान हो रहा है। किसानो के लिए सारे हालात ऐसे है कि जिंदा कैसे रहा जाए इस स्थिति में वह फाँसी के फंदे को अपनाकर आत्महत्या कर रहा है। इस कहानी ने किसानो के अन्दर कि विद्यमान समस्याओं को खोलने का सफल प्रयास किया है।

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

संदर्भ

1. प्रतिनिधि कहानियाँ मराठी– कर्जमुक्ति–रा.रं.बोराडे–सम्पादक डॉ. माधव सोनटक्के पृ.105
2. वही – पृ.106
3. वही – पृ.106
4. वही – पृ.107
5. वही – पृ.108
6. वही – पृ.109
7. वही – पृ.110

(हिन्दी विभागाध्यक्षा) वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर तह. अंबाजोगाई जि. बीड (डै)
मो. नं. 9420652970
Email : drbmkotule@gmail.com

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

12. अगली नाटक में शोषण की अभिव्यक्ति 83
–डॉ. सविता पुंडलिक चौधरी
13. माधवी नाटक : स्त्री शोषण की 21वीं सदी में प्रासंगिकता 90
–डॉ. नीलम ए. सेन
14. 21वीं सदी में 'एक कंठ विषपायी' नाटक की प्रासंगिकता 94
–मुक्ति प्रभात जैन
15. 'लड़ाई' नाटक में सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग 99
–प्रा. मंगल संभाजीराव खुपसे
16. आषाढ़ का एक दिन : 21वीं सदी के मानवीय हृदय के अंतर्द्वन्द्वों... 105
–डॉ. ज्योतिमय बग
17. 21वीं सदी में हानूश नाटक के कलाकार की प्रासंगिकता 111
–डॉ. महेशकुमार जे. वाघेला
18. 21वीं सदी में बकरी नाटक की प्रासंगिकता 115
–डॉ. राजाबाई
19. वीमा नाटक में विकलांग संवेदना 119
–प्रा. डॉ. बायजा कोटुळे
20. 21वीं सदी का नाटक धरती आबा में व्यक्त आदिवासी विमर्श 123
–डॉ. शिंदे मालती धौंडोपन्त
21. 21वीं सदी के नाट्य लेखन में 'अंजो दीदी' नाटक की प्रासंगिकता 127
–सिमरन
22. 21वीं सदी के हिंदी नाटकों का विकास एवं उसमें आये बदलाव 132
–राधा आत्माराम राठोड
23. जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याइ ही नई नाटक की 21वीं सदी में... 137
–डॉ. अर्जुन सिंह पंवार
24. आधे-अधूरे नाटक में मध्यवर्गीय परिवार की त्रासदी 143
–सुरिन्द्रपाल कौर
25. लहरों के राजहंस नाटक में प्रतीक योजना 149
–डॉ. प्रिया ए.
26. दुष्यन्त कुमार के काव्य नाटक 'एक कंठ विषपायी' में संवेदना... 153
–डॉ. शोभा बघेल
लेखक परिचय *157*

भूमिका

'काव्येषु नाटकं रम्यम्' अनुसार साहित्य की सबसे सुंदर एवं महत्वपूर्ण विधा 'नाटक' है। यह विधा लोक जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करती है। नाटक शब्द 'नट्' धातु में 'ण्वुल' प्रत्यय लगाकर बनाया गया शब्द है जिसका आशय है, जिस विधा में लौकिक अर्था और भावों का अभिनय किया जाय। नाटक एक ऐसी विधा है जो दृश्य भी होता है और श्रव्य भी। मानव सभ्यता के प्रारंभ काल से ही कहीं न कहीं नाटक का बीच निहित था। संगीत, नृत्य, संवाद एवं अभिनय ये सभी नाट्यकला के अभिन्न अंग है। जंगलों में निवास करता हुआ मनुष्य जब एकाकी जीवन व्यतीत करता था, तब भी संगीत एवं नृत्य उसके साथी थे। धीरे-धीरे मनुष्य ने जब अपना समाज बनाया तो वे कलायें संघटित होकर मनोरंजन का एकमात्र साधन बन गइ। इस मनोरंजन के साधन को 'नाटक' की संज्ञा मिली।

वैसे तो प्रमुख रूप से हिन्दी नाट्य-साहित्य का उद्भव भारतेन्दु के नाट्य-साहित्य से माना जाता है। विदेशी शासन की कूटनीति देशवासियों की दयनीय स्थिति, राष्ट्रीय भावना आदि भारतेन्दु नाट्य-साहित्य की प्रमुख विशेषतायें थी। उन्होंने प्रथम चरण में नाटक को जिस सीमा तक पहुँचाया,वहीं से जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी नाटक की विकास परम्परा का दूसरे चरण का सूत्रपात किया। प्रसाद कृत नाटकों जिसमें सांस्कृतिक क्षतिनैतिक पतन एवं सामाजिक जड़ता आदि प्रवृत्तियां सम्मिलित थीउनसे हिन्दी नाटक की विकास परम्परा में भी वृद्धि हुई है। प्रसाद युगीन अन्य नाटककारों में सुदर्शन गोविंद वल्लभ पंतबद्रीनारायण भट्ट पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र आदि प्रमुख है। उन्होंने ऐतिहासिक पौराणिक तथा सामाजिक जैसे विविध स्तर के नाटकों की रचना की है जिसमे सुदर्शन कृत 'दयानंद' बद्रीनारायण भट्ट कृत 'चन्द्रगुप्त' गोविन्द वल्लभ कृत 'परमाला' आदि प्रमुख है।

प्रसाद युग के पश्चात् लक्ष्मीनारायण मिश्र मोहन राकेश जैसे नाटककारों ने अपने-अपने ढंग और अभिरूचि से नाटक के तीसरे चरण का सूत्रपात करते हुए उसे अग्रसित किया। प्रसाद पश्चात् नाटकों को स्थूल रूप से वर्गा में विभाजित किया जा सकता है। ऐतिहासिक पौराणिकराजनैतिक एवं सामाजिक।

एक ओर ऐतिहासिक नाटकों की परम्परा को आगे बढ़ाने में उदयशंकर भट्ट का अपूर्ण

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

इन अत्याचारी, दुष्कर्मी, झूठे, लुच्चे राजनेताओं का पर्दाफाश करके एक सुशिक्षित, सर्वधर्मिय समान, लोकहित करनेवाले राजनेताओं का निर्माण करना होगा, जो कि हमारे महान, विशाल भारत देश को समानता और सफलता के उच्च शिखर पर पहुंचा सके।

संदर्भ

1. बकरी नाटक, पृ. 34
2. वही, पृ. 38
3. वही, पृ. 38
4. वही, पृ. 45
5. वही, पृ. 46
6. वही, पृ. 46
7. वही, पृ. 47

19. वीमा नाटक में विकलांग संवेदना

–प्रा. डॉ. बायजा कोदुळे

विकलांगता समाज का अभिन्न अंग है। विकलांगता भी एक विचार-विमर्श का विषय है। संस्कृत साहित्य से लेकर हिन्दी साहित्य तथा भारतीय भाषाओं के सभी साहित्य में विकलांग विमर्श से जुडी हुई अनेक रचनाएँ उपलब्ध होती हुई दिखाई देती है। विकलांगता एक तो जन्मजात होती है या किसी दुर्घटना के कारण उत्पन्न होती है। उस पर विचार विमर्श होना आज महत्वपूर्ण है। विकलांग विमर्ष आज की अवश्यकता है। इससे समाज के एक बहुत बडे वर्ग का दुःख हमारे सामने आता है।

"जाति और लिंग से परे विशुद्ध मानवतावादी दृष्टि पर केंद्रीत विकलांग-विमर्श इक्कीसवी सदी का चर्चित विमर्श सिद्ध हुआ है।"[1] इक्कीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य भी विकलांग विमर्श से अछूता नहीं रहा हैं। हिंदी साहित्य में ऐसी अनेक विधाएँ है। जो विकलांग को लेकर लिखी गई है। उन लोंगो को समाज की मुख्य धारा लाने का प्रयास कर रहे हैं। इस दृष्टि से हिन्दी नाटय साहित्य में रत्नकुमार सांभरिया एक सजग नाटककार है। उन्होंने अपने 'वीमा' नाटक में एक नेत्रहीन पत्नी का अपहरण होने के बाद पत्नी को पाने के लिए पति का दृढ संघर्ष है।

नाटक की कथावस्तु में पूर्वदीप्ति (कैलशबैक) शैली का प्रयोग किया है। किसी फिल्म की तरह जमन वर्मा और वीमा की पहली मुलाकात का दृश्य हमें दिखाई देता है। नाटक की नायिका वीमा सवर्ण जमींदर की बेटी है। उसे दो भाई है। माँ की मृत्यु हो चुकी है। वह घर पर उससे जो बनता हैं। वह काम कर लेती हैं। जमींदार पिता अपनी नेत्रहीन बेटी का विवाह अपने ही जैसे एक अधेड़ उम्र के पहले से विवाहित निःसंतान जमींदार से करवाना चाहता हैं। पर विमा इसका विरोध करती हैं, और एक दिन मौका मिलते ही घर से शहर भाग जाती है। अकेली बेसहारा नेत्रहीन जवान वीमा को देखकर एक गुण्डा उसे स्टेशन के पास एक गडडे में ले जाकर अवसर का लाभ उठाना चाहता है। पर उस की चीख सूनकर जमन उस गुण्डे

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

को पथर मार कर भगा देता है और वीमा को बचाता है। जमन वीमा को अपने साथ लेकर आता है और नेत्रहीन संस्था के चालक ष्यामाजी से मिलवाता है। श्यामाजी वीमा को देखकर उसे अपने साथ रखने के लिए कहता हैं।

जमन वीमा को अपने कमरे लेकर आता है और तीन दिन से भूखी वीमा को बाहर से भोजन लाकर खिलाता है। रात में जब वे एक ही विस्तर पर सोते हैं तो इंसानियत और नैतिकता का पालन जमन करता है, इससे वीमा प्रभावित होती है, और विवाह का संकेत देती है। इसिलिए वह यामाजी के पास विवाह की अनुमति के लिए जाता हैं। लेकिन जमन कुछ कहने से पहले श्यामाजी ही उसे विवाह की बात करता हैं। "वह भी नेत्रहीन तूम भी नेत्रहीन वह भी नेत्रहीन। तुम भी सुंदर। हम उम्र से भी हो तुम दोनों। चाहो तो शादी कर लो अभिभावक की भूमिका मे मैं हूँना।"[2] और दोनों का आपसी सम्मति से विवाह हो जाता हैं। विवाह से पहले वह अपनी दलित होने की सच्चाइ को व्यक्त करता है। वीमा तो जात-पात से उपर है विवाह होने के बात वीमा चार माह के पेट से हैं। एक दिन जमन को पता चलता हैं कि वीमा घर पर नहीं है। उसे लगता है कि वह मइके गयी होगी। किन्तु बिन बतायें जाना उसे यह बात खलती है। वह यामाजी के पास जाता है और वीमा की बात कहता है पर श्यामाजी उसे सामुहिक विवाह में किसी दूसरी लडकी से विवाह और पाँच सौ रूपये वेतन बढाने की बात कहता है और तलाक के कागजात पर हस्ताक्षर करने के लिए कहता है। लेकिन जमन नहीं मानता तो श्यामाजी उसे जाति छुपाने का आरोप लगाता है, उसे स्कूल से निकाल देता हैं। लेकिन जमन वर्मा उनसे डरता नहीं वह निडर होकर स्पष्ट कहता है, "मैं नेत्रहीनहूँ। कायर नहीं। वीमा की खतिर मरने से भीनहीं डरूंगा मैं। .... वीमा को चौथा महीना है। अगर मेरी बीवी और होने वाले बच्चे के साथ कुछ हो गया तो कटघरे में होंगे आप।"[3] जमन वर्मा नेत्रहीन होकर भी अपनी वीवी को पाने के लिए अपने नौकरी से और अपनी घर से हाथ धोना पडता है।

स्कूल से निकाल देने पर वह आका के पास जाता है। जो निःशक्तों के रक्षक है। किन्तु वह भी श्यामाजी की बोलती बोलता हुआ दिखाई देता है। जमन समझ जाता हैं कि श्यामाजी जमींदार और उसका लडका पहले से ही वहाँ बैठे हुए हैं। जमन किसी से डरता नहीं है। वह किसी भी हालत में अपनी पत्नी वीमा को पाना चाहता हैं। इसिलिए वह वहाँ से हताश होकर निकल जाता हैं। और ऑटोरिक्शा में बैठकर विकलांग संघ के अध्यक्ष एवं अपने मित्रदेवतसिंह के पास जाता है। देवतसिंह को पत्नी वीमा के अपहरण, "यामाजी एवं निःशक्तों के आका, वीमा के जमींदार पिता एवं भाई का व्यवहार बताता हैं। तब देवतसिंह उसके साहस एवं विश्वास को बढ़ाते

हुए पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करने की बात करता हैं। देवतसिंह भी विकलांग है, उसके दोनां पैर घुटने तक ही है। फिर भी जमन वर्मा के साथ पुलिस थाने जाता है। थाने में शिकायत दर्ज की जाती हैं। किन्तु बाद में पता चलता हैं कि थानेदार ने एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की वह तो वैसे ही टेवल पर पड़ी हुई है।

देवतसिंह जमन वर्मा को न्याय देने के लिए अपने परिचित शहर के प्रतिष्ठित अखबार 'दैनिक बाज' के संवाददाता चमक चन्द्र झा को बुलाता है। उसे वीमा के अपहरण, श्यामाजी, आका जमींदार पिता, भाई, थानेदार आदि सभी के बारे में बताता हैं। घटित बातें सुनकर इस पर पत्रकार उन्हें अपने समाचार पत्र के माध्यम से न्याय देने की बात करता हुआ चला जाता है, और सीधे श्यामाजी से मिलता है और वीमा के अपहरण, जमन वर्मा को नौकरी से निकालना, जाति-भेद आदि का कारण पूछता हैं। श्यामाजी पत्रकार झा के कारण अपने भविष्य को संकट में पाता हैं। इसीलिए पहले वह उसे जाति का प्रलोभन देता हैं। जब वह जाति के प्रलोभन से नहीं मानता तब वह पैसों के प्रलोभन से खरीद लेता हैं। पत्रकार झा श्यामाजी के अनुसार खबर को दुसरे दिन दैनिक बाज समाचार पत्र में छाप देता हैं। जमन वर्मा को समाचार पत्र से न्याय देने के बजाय, उसे ही गलत साबित करते हुए वह श्यामाजी को सही साबित करता हैं।

दुबारा जब जमन और देवतसिंह थाने जाते हैं तब थानेदार समाचार पत्र में छपी बात को लेकर उन्हें ही डराता है, "साले, अंधे, लंगडे-लुले भी बडे घरों की लडकियो को धोका देकर उनसे शादी रचाने लगे हैं। ज्यादती करने लगे हैं। गुण्डे कहीं के।"[4] जमन वर्मा की मदत करने के बजाय थानेदार उसे ही डराता-धमकाते हुए कहता है, "ले ये तेरी अर्जी पकड और भाग जा यहाँ से। विकलांग हो दोनो और होते तो सीधा अंदर कर देता। आइंदा ऐसी झूठी शिकायत लेकर थाने मत चले आना।"[5] जमन वर्मा के पास यह एक ही मौका था जिससे वह वीमा को प्राप्त कर सकता था। वह श्यामाजी, निःशक्तजनों के आका, थानेदार, पत्रकार के पास जाता है। लेकिन चहुँ और से वह अपने आप को असफल पाता है। किन्तु उसका मित्र विकलांग संघ के अध्यक्ष देवतसिंह चौहान उसमें साहस, आशा, विश्वास को जगाता है। वह कहता है, "निःशक्त अपनी पर उतर आए तो लोहे की गेंद हैं। लोहे की गेंद को नि किक मारी जा सकती है न उसे उछाला जा सकता है।"[6]

देवतसिंह, जमन वर्मा और अन्य विकलांगो के साथ निःशक्तों के आका के कार्यालय के सामने धरना देता है, जमन वर्मा एक पैर पर खड़ा रहता है, पैर के नीचे श्यामाजीका गमछा दबाया हुआ है। निःशक्तों के कार्यालय के सभी लोंगो को रोका जाता है, किसी को भी अंदर जाने नहीं देता इसी खीचातानी में आका की धोती

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

निकलती है और जमन के पैर के नीचे रखी जाती है, यह खबर शहर के सभी अखबारों में छपी जाती है। यह समाचार सुनकर सभी आसपास के विकलांग भी उस धरने में शामिल हो जाते है। इस का प्रभाव ऐसा पड़ता है कि डर के मारे वीमा जमन को लौटा दी जाती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि, जमन वर्मा नेत्रहीन होते हुए भी एक स्वाभिमानी, हुशार, अन्तरज्ञानी के रूप् में चित्रित हुआ है। जमन अंत तक पत्नी वीमा कोपाने के लिए संघर्ष करता है। वह चूप बैठता नहीं है, नेत्रहीन संस्था के संस्था चालक श्यामाजी से, निःशक्तों के आका, पत्रकार, थानेदार, आदि से मिलता है। लेकिन चँहु ओर से निराश होता है। अंत में विकलांग संवेदना के साथ ही जाति-भेद नेताओं, थानेदार, पत्रकारो की दोगली नीति का पोल खोलने का काम भी यह नाटक करता हुआ नजर आता है।

संदर्भ

1. कथा साहित्य में विकलांग विमर्श, संपा, विनयकुमार पाठक, पृ. 136
2. वीमा, रत्नकुमार सांभरिया, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 44
3. वही, पृ. 21-22
4. वही, पृ. 70
5. वही, पृ 73
6. वही, पृ. 77

20. 21वीं सदी का नाटक धरती आबा में व्यक्त आदिवासी विमर्श

–डॉ. शिंदे मालती धोंडोपन्त

आदिवासीयों के जीवन पर साहित्यिक क्षेत्र में चर्चा हो रही है। देश में जितने भी उपेक्षित हाशिये के समाज हैंउसमें स्त्री, दलित अल्पसंख्यक, किन्नर, विकलांग, स्थलांतरित, विस्थापित और आदिवासी अपने अस्तित्व को तीखे शब्दों में अभिव्यक्त कर रहे हैं आदि शब्द का अर्थ प्राचीन, आरंभ या मूल और वासी शब्द का अर्थ है निवासी। आदिवासी शब्द का अर्थ होता है, प्राचीन काल से रहनेवाला, मूलनिवासी। भारतीय संविधान में इन्हें अनुसूचित जनजाति केरूप में संबोधित किया है।

भारतीय और पाश्यात्य विद्वानों ने आदिवासी जाती की व्याख्या की है :

1. शिलांग परिषद 1952 : "एक समान भाषा का प्रयोग करनेवाले, एक ही पूर्वजों से उत्पन्न, विशिष्ट भू प्रदेश में वास्तव करनेवाले, तंत्र शास्त्रीय दृष्टि से पिछड़े हुए निरक्षर, खून के रिश्तों पर आधारित सामाजिक, राजकीय, राजनीति आदि का प्रामाणिक पालन करनेवाला एक जिन्सी गट यानी आदिवासी जाती है।"[1]

2. प्रो. गिलानी : "एक विशिष्ट भू-प्रदेश में रहनेवाला,समान बोली बोलनेवाला,अक्षरों की पहचान न होनेवाला,समूह गट,आदिवासी समाज कहलाता है।"[2] जंगलों, पहाड़ों और खाइयों में रहकर जल, जंगल और जमीन पर अपना भरण पोषण करने वाले सनज को प्रस्थापित समाज नकारता है। उन्हें जंगल और जमीन से भगाने की होड़ सी लगी है। उन्हें नगर से कोसो दूर रखा है। आजादी के वाद आदिवासियों के अस्तित्व को नकारने वाले हिन्दू धर्मियों में भी आदिवासियों के प्रति विचारों में परिवर्तन होने लगा। नए उभरते आदिवासी साहित्यकार और अन्य मुख्यधारा के साहित्यकारों ने मिलकर आदिवासी साहित्य द्वारा आदिवासी समाज,संस्कृति और समस्या पर खुलकर तटस्थ विमर्श करने की आवश्यकता है।" अदिमता का एहसास और संवेदना के साथ प्रकट होनेवाला साहित्य याने आदिवासी साहित्य कहा जा

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

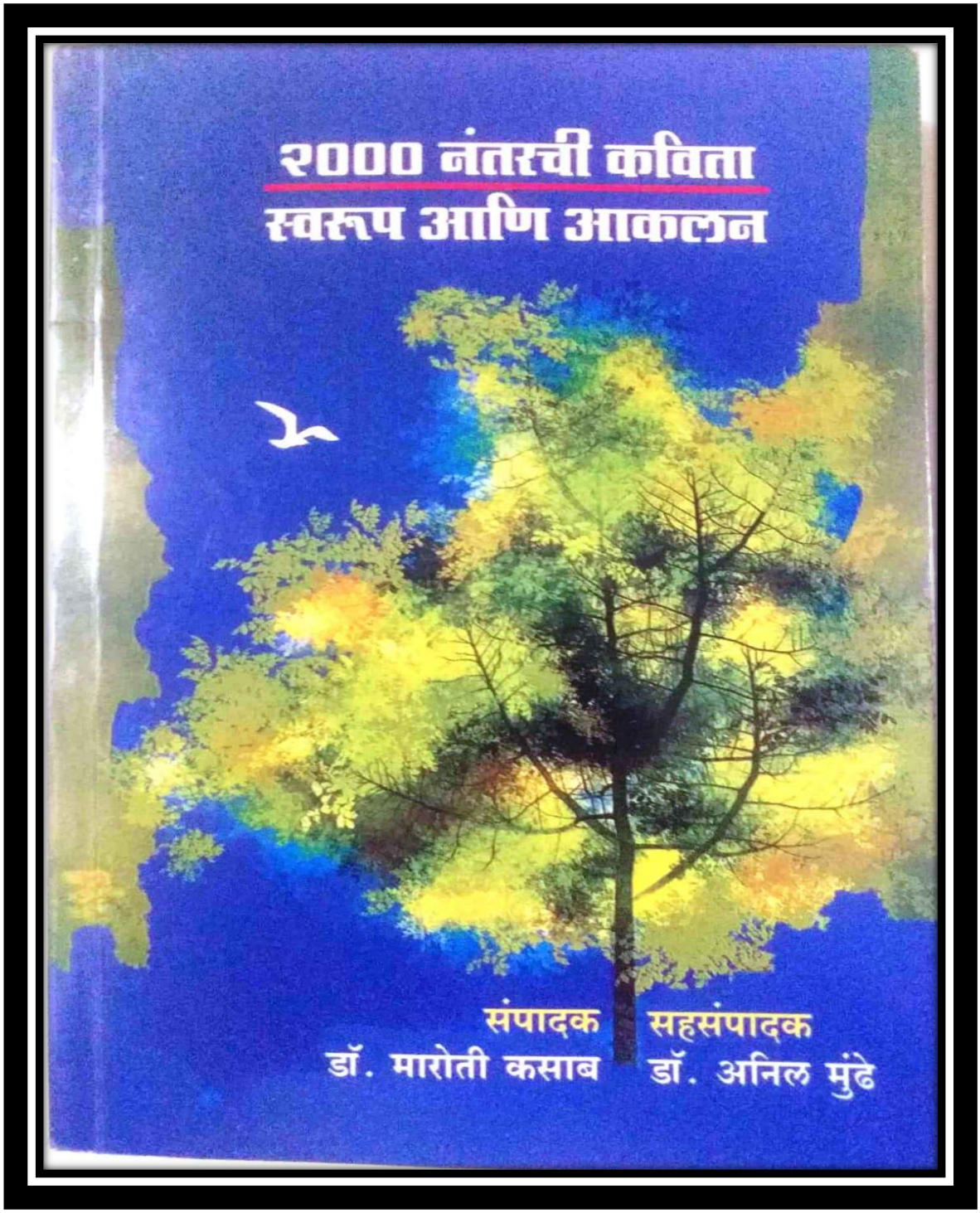

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

२००० नंतरची कविता : स्वरूप आणि आकलन

संपादक
डॉ. मारोती कसाब
मराठी विभाग, महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपूर जि. लातूर

सहसंपादक
डॉ. अनिल मुंढे
मराठी विभाग, महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपूर जि. लातूर

सिद्धी पब्लिकेशन हाऊस, नांदेड.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	प्रकरणाचे नांव	लेखक	पृ. क्र.
०१.	संपादकीय मनोगत	डॉ. मारोती कसाब डॉ. अनिल मुंढे	०६
०२.	प्रस्तावना	प्राचार्य डॉ. वसंत बिरादार	०८
०३.	'२००० नंतरची मराठी कविता'	प्रा. डॉ. प्रतिभा सुरेश जाधव	१७
०४.	"प्रकाशपर्वाचा साक्षीदार असलेली उजेडाची कविता"	डॉ. युवराज मानकर	२६
०५.	कवी भाऊ भोजने यांचा 'निळा प्रक्षोभ'	डॉ. शत्रुघ्न जाधव	४०
०६.	'संदर्भ शोधताना' कवितासंग्रहातील कवितांमधून येणाऱ्या सामाजिकतेचा अभ्यास	प्रा.उन्मेष शेकडे	५०
०७.	स्त्री साहित्याची वैचारिक पार्श्वभूमी आणि २००० नंतरच्या कवयित्रीच्या कवितेतींल आत्मभान	प्रा. गौतम गायकवाड	५७
०८.	गावगाड्याचा बदलता अवकाश शब्दबद्ध करणारा काव्यसंग्रह: 'बोलावे ते आम्ही'	डॉ.सुरेश शिंदे	७३
०९.	सामाजिक समतेचा पुस्कार करणारा काव्यसंग्रह : आरंभबिंदू	डॉ. पंजाब शेरे	८०
१०.	विषमतेविरूद्ध बंड पुकारणारी कविता: 'आता क्रांती दूर नाही'	डॉ. संतोष चंपती हंकारे	८८
११.	जगदीश कदम यांच्या कवितेतील व्यक्तीरेखा	प्रा. गोरोबा शेषराव रोडगे	९७
१२.	२००० नंतरच्या आदिवासी कवितेतील भाकरीचे प्रश्न	डॉ. राजेश धनजकर	१०२
१३.	२००० नंतरच्या कवयित्रींच्या कवितेतील जागतिकीकरणाचे चित्रण	डॉ. रामकिशन दहिफळे	११०
१४.	२००० नंतरच्या ग्रामीण कवितेचे बदलते स्वरुप	डॉ. संजय खाडप	११९

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519

२००० नंतरच्या ग्रामीण कवितेचे बदलते स्वरुप

प्रा. डॉ. संजय खाडप

वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, जि. बीड

२००० नंतरच्या मराठी ग्रामीण कवितेचे बदलते स्वरुप लक्षात घेत असताना २०२० पर्यंतचा विशेषत: दोन दशकांचा, बदलत्या समाजस्थितीचा चेहरा लक्षात घ्यावा लागतो. आज प्रत्येक खेडे-पाढे, जाती-धर्मामध्ये विभागलेले दिसून येत आहेत. शहरामध्ये आढळणाऱ्या परस्परावरील अविश्वासाने गावातही आपले हात - पाय पसरलेले दिसून येत आहे. राजकारण गढूळ झाले. नापिकी, कर्जबाजारीपणा, अग्◌ातिकता पराकोटीची असहाय्यता यातून आत्महत्यांची साथ गावा - गावात पसरलेली दिसून येते. माणसाचे मनं अधिच बधी झालेले दिसून येते. त्याचबरोबर परिवर्तन, प्रबोधन याशिवाय अपेक्षा, त्यातील फोलपणा, शिक्षणक्रांती, भ्रमनिरास, वास्तव, भौतिकता आणि माणूस यांच्यातल्या बदलामुळे माणसांचे गौणत्व अशा काही समाज जीवनावर स्पष्ट कोरीव परिणाम करणाऱ्या गोष्टी २००० नंतरची दशके एकूण जबरदस्त पध्दतीने बदलून टाकण्यासाठी कारणीभूत झाल्याचे दिसून येते.

इ.स. २००० नंतर ग्रामीण समाजात मोठ्या प्रमाणात बदल झालेले दिसून येतात. हे बदल म्हणजे राजकारण आणि निवडणूका यांनी माणसांची किंमत व हिम्मत कमी केली. समाजा-समाजामध्ये तेढ निर्माण केली. भ्रष्टाचारात मोठ्या प्रमाणात वाढ होत गेली. माहितीचा अधिकार आला. लोक कल्याणकारी नवे कायदे तयार झाले. नव्या शैक्षणिक संस्था व शेतीचं नवं तंत्रज्ञान ग्रामीण भागात आले. साधन आणि संपत्ती यांची सहज उपलब्धी झाली. नोकरी क्षेत्रात ग्रामीण भागातील तरुण मोठ्या प्रमाणात येऊ लागला. जीवघेण्या स्पर्धा वाढल्या. बेकारी मोठ्या प्रमाणात वाढली. अहंकार वाढला, माणसाच्या मनामध्ये इतरांबद्दल आकस वाढला. पैसा, मतलब, याच्या भोवतीच दुनिया फिरु लागली. दळणवळणांची साधने, प्रसारमाध्यमे, इंटरनेट, नवे माहितीजाल ग्रामीण भागात आले. याचे परिणाम ग्रामीण बोलीभाषेवर झाले. याचे चित्रण डॉ.भारत हंडीबाग यांच्या 'संवाद चकल्या' या कविता संग्रहात दिसून येते.

"मला भेटण्यासाठी तू
कधीच आला नाहीस वेळेवर
आता मात्र तू ये

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

ठरलेल्या वेळी संकेत स्थळावर"

वरील कवितेत प्रेयशी आपल्या प्रियकराबद्दल तक्रार करताना दिसते. खरंतर प्रियकर असो अथवा प्रेयशी दोघांनाही एकमेकांबद्दल भेटण्याची ओढ असते. दोघा पैकी एकाला जरी येण्यासाठी उशीर झाला तर मनाला रुकरुक लागून राहते. ही रुकरुक, ही ओढ, ही खंत प्रेयशी व्यक्त करते आणि प्रियकराला संकेत स्थळावर ठरलेल्या वेळेप्रमाणे भेटण्याचे सुचवते. प्रेयशीला प्रियकराबद्दल जशी ओढ आहे, तशी प्रियकरालाही प्रेयशी बददलची ओढ डॉ.भारत हंडीबाग यांच्या कवितेत दिसून येते.

"तुझ्या मनाचे ढग बघून
कृत्रीम पाऊस पाडायला गेलो
एकही थेंब गळाला नाही तरी
नुसतंच विमान उडवीत गेलो. "

संकेतस्थळ, कृत्रीम पाऊस, विमान इत्यादी शब्द, इत्यादी प्रतिमा ग्रामीण भाषेत आलेल्या दिसून येतात. आज ग्रामीण भागातील व्यक्ती शिक्षण घेऊन नोकरी करु लागला आहे, जैविक शेती करु लागला आहे. रासायनिक खते बियाणे यांचे सर्रास वापर करु लागला आहे. भूता-खेतावरचा विश्वास उडाल्यामुळे गंडे दोऱ्याचे प्रमाण दिवसें-दिवस कमी होत आहे. आज वैज्ञानिक दृष्टीकोण डोळयासमोर ठेवून ग्रामीण जीवन बदलत आहे.

याचे चित्रण जेष्ठ कवी वि.सो.वराट यांच्या कवितेत दिसते.

"लिंबा नारळाचे चोचले
किती दिवस पुरवायचे
बळीसाठी पाच-पाच बकरे
आणा कुणाच्या बापाचे
आमच्याकडून खाणारा तू
तूझ्याकडून मिळणार काय ?"

संत तुकाराम महाराज ज्याप्रमाणे अंधश्रध्देवर प्रहार करतात. अग्ादी त्याचप्रमाण्ो वि.सो.वराट सुध्दा अंधश्रध्देवर प्रहार करतात विज्ञानाची डोळस दृष्टी देतात.

हुंडा घेणे आणि देणे हा कायद्याने गुन्हा आहे, तरीही मोठ्याप्रमाणात हुंडा दिला- घेतला जातो. त्यामुळे अनेक घर दारिद्रयाच्या खाईत लोटले जातात. आज ग्रामीण भागातील मुलं-मुली शिक्षण घेत आहेत. उच्च विद्या विभूषीत होत आहे. त्यामुळे हुंडयाचे प्रमाण कमी होत आहे. आज ग्रामीण भागातील स्त्रीयांसुध्दा हुंडयाच्या विरुध्द आहेत यांचे चित्रण डॉ.भारत हंडीबाग यांच्या कवितेत दिसते.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

"कालेजच्या कार्यक्रमात विद्येन
लई चांगलं भाषण केले,
मी हुंडा नाही घेणाऱ्याशी
अन सिकलेल्या पोरासंगच लगीन करणार
मग त्योव कुण्याबी जाती धर्मातला असो"

आंतरजातीय विवाहाचे प्रमाण पूर्वी शहरामध्येच दिसून येत असे, पण आता याचे लोन ग्रामीण भागातही दिसून येत आहे. आज विज्ञानाने जग घरात आले, पण घरातील माणसं बाहेर फेकल्या गेली. आपली बायको, मुले आणि स्वत: एवढेच मर्यादीत कुंटुंब झालेले दिसते. घरातील वृध्द माणसे नकोशी झालेली दिसत आहे. म्हणजेच शहरातल्याप्रमाणे ग्रामीण भागातही आई-वडील, म्हतारं-म्हातारी नकोशी वाटू लागली आहे. यांचे चित्रण रमेश मोटे यांच्या 'साहेब' या कवितेत दिसून येते.

"नातवंडांना भेटण्यासाठी
म्हातारी लाळ घोटायची
गोठ्या मध्यल्या गावंढळ मायीची
लाज त्याला वाटायची"

अशा ही लाळघोठी अवस्था खेडयापाडयातील दिसून येत आहे. नोकरीच्या निमित्त मुलगा शहरात राहतो. आई-वडिलांना मात्र गोठ्यातच ठेवतो. त्यांना नातवडांना भेटावं वाटतं, पण त्यांना भेटता येत नाही. आज मुलाला आपल्या म्हाताऱ्या आई-वडिलांची लाज वाटत आहे. अशाप्रकारे २००० नंतरची ग्रामीण कविता, तीचे स्वरुप तीचे बदलते जीवन पहाण्यास मिळते.

संदर्भ :

1) ग्रामीण साहित्य - स्वरुप आणि संदर्भ, संपा.प्रा.डॉ.जयद्रथ जाधव.
2) संवाद चकल्या- डॉ.भारत हंडीबाग
3) बरस बरस मोती- वि.सो.बराट
4) राना- मनातील कविता - रमेश मोटे.
5) धनी - डॉ.भारत हंडीबाग

***

PRINCIP
Vasundhara College,
Ta. Ambajogai Dist.Be

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Vasunchara Arts & Sci... GHATNANDUR

प्रति

"ICT based library services in COVID – 19 Pandemic"

Editor

Mr. Gopal D. Sagar
Librarian
M. S. P. Mandal's
Arts, Commerce and Science College,
Kille-Dharur, Beed.

Dr. Govind S. Ghogare
Librarian
L.G.V. S. Loha's
Lokmanya Arts Mahavidyalaya,
Sonkhed, Nanded

Dr. Vishnu M. Pawar
Librarian
K. S. P. Mandal's
Shivaji Mahavidyalaya,
Udgir, Latur

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519

"ICT based library services in COVID – 19 Pandemic"

© Mr. Gopal D. Sagar

❖ Publisher :
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed (Maharashtra)
Pin-431126, vidyawarta@gmail.com

❖ Printed by :
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
www.vidyawarta.com

❖ Page design & Cover :
Shaikh Jahuroddin, Parli-V

❖ Edition: August 2021

ISBN 978-93-85882-65-4

❖ Price : 200/ -

All Rights Reserved, No part of this publication may be reproduced, or transmitted, in any form or by any means, electronic mechanical, recording, scanning or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner. Responsibility for the facts stated, opinions expressed. Conclusions reached and plagiarism, If any, in this volume is entirely that of the Author. The Publisher bears no responsibility for them. What so ever.Disputes, If any shall be decided by the court at Beed (Maharashtra, India)

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

"ICT based library services in COViD – 19 Pandemic" 8

16. ग्रंथालयाची कोरोना काळात तांत्रिक पध्दतीने माहिती सेवा.
प्रा.किर्दंत विलास गोपीनाथराव, प्रा.मोरे जयंत हंसराज ||131

17. आय.सी.टी. आणि ग्रंथालय सेवा
Dr. V.B. Mane, Ambajogai. ||139

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Vasundhara Arts & Science College
GHATNANDUR

16

ग्रंथालयाची कोरोना काळात तांत्रिक पध्दतीने माहिती सेवा.

प्रा.किर्दत विलास गोपीनाथराव
ग्रंथपाल
वसुंधरा महाविद्यालय, धाटनांदूर, ता. अंबाजोगाई जि.बीड

प्रा.मोरे जयंत हंसराज
ग्रंथपाल
जनविकास महाविद्यालय, बनसारोळा, ता.केज जि.बीड

प्रस्तावधा :

ग्रंथालयाचा मुख्य उद्देश विद्यार्थी, वाचक, संशोधक व गरजू॥ आवश्यक ती माहिती अल्प कालावधीत उपलब्ध करुन देणे आहे. या उद्देशाच्या पुर्तते करीता आधुनिक

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

काळात ग्रंथालयाचे स्वरुप हे संगणकीकृत होत आहे. तसेच वाचकांना कमीत कमी वेळेत आवश्यक ते वाचन साहित्य उपलब्ध करुन देण्यासाठी आणि ज्ञानाचा आवाका वाढवण्याकरिता ग्रंथालय व्यवस्थापन व नियोजन संगणकीकृत होत आहे. हस्तलिखित, मुद्रित वाचन साहित्य जेवढया गतीने विकसीत होत आहे. त्याही पेक्षा अधिक गतीने ग्रंथालय आय.सी.टी.द्वारे विद्यार्थी शिक्षक, अध्यापक, वाचक, संशोधक यांना माहिती देत आहे.

आधुनिक काळात ग्रंथालयशास्त्रीय पध्दतीने कामकाजाचे व्यवस्थापन व नियोजन करण्याकरिता आय.सी.टी.चा उपयोग करीत आहेत. आय.सी.टी.च्या वापरामुळे ग्रंथालयीन कामकाजातील वेळ व श्रम यांची बचत होत आहे. त्याच बरोबर तांत्रीक उपकरणाच्या वापरामुळे ग्रंथालयात सखोल माहिती संकलीत करुन ठेवणे शक्य झाले आहे. संकलीत करुन ठेवलेली माहिती अल्प वेळेत वाचक संशोधक यांना उपलब्ध करुन देता येते. तसेच आय.सी.टी.च्या वापरामुळे कामाकाजार्तील वेळ व श्रम यांची बचत होत आहे. त्याच बरोबर तांत्रीक उपकरणाच्या वापरामुळे ग्रंथालयात सखोल व विशाल स्वरुपाची माहिती संकलीत करुन ठेवणे शक्य झाले आहे. संकलीत करुन ठेवलेली माहिती विद्यार्थी, शिक्षक, अध्यापक, संशोधक, वाचक यांना कमीत कमी वेळेत उपलब्ध करुन देता येते. तसेच आय.सी.टी.च्या माध्यमातून वाचकांना आवश्यक असणाऱ्या आधुनिक तांत्रिक सुविधा आणि ऑनलाईन ग्रंथ व वाचन साहित्याची सेवा उपलब्ध करुन दिली जात आहे.

भारतामध्ये मार्च २०२० मध्ये कोरोना व्हारसचा प्रादुर्भाव सुरु झाला. कोरोना व्हारसचा फैलाव होवू नये. कोरोना व्हारसची साखळी तुटून तो संपूष्टात यावा या करिता देशात जनता संचार बंदी (Lock down) करण्यात आले. जनता संचार बंदीमुळे, शाळा, महाविद्यालय, विद्यापीठ बंद झाले. त्यामुळे विद्यार्थी शिक्षक, अध्यापक, संशोधक, वाचक इत्यादीच्या क्रमीक पुस्तके, संदर्भग्रंथ, मासिके, साप्ताहिके, वर्तमानपत्रे इत्यादी वाचन साहित्याची गैरसोय झाली तेंव्हा ग्रंथालयाने विद्यार्थी, शिक्षक अध्यापक, संशोधक, वाचक यांना अध्ययन पुस्तिका व वाचन साहित्याची सुविधा ऑनलाईन निर्माण करुन देण्याकरीता आय.सी.टी.चा आवलंब केला. कोरोना काळात ग्रंथालयाने माहिती तंत्रज्ञानाद्वारे कशा पध्दतीने माहिती सेवा पुरविली आहे. या अध्ययनाकरीता पुढीलप्रमाणे संशोधनाची उद्दिष्टे मांडण्यात आली आहेत.

उद्दिष्टये :

१) कोरोना व्हारसचे स्वरुप आणि वाचक वर्गाच्या समस्यांचा अभ्यास करणे.

२) माहिती तंत्रज्ञानाचा अर्थ व स्वरुप जाणून घेणे.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

३) माहिती तंत्रज्ञानाचे घटक अभ्यासने.

४) ग्रंथालयाने माहिती प्रसारीत करण्याकरिता वापरलेल्या विविध तांत्रिक घटकाचा अभ्यास करणे.

सदरील उद्दिष्टांच्या पूर्ततेकरीता खालीलप्रमाणे गृहितकृत्यांची मांडणी करण्यात आली.

गृहितकृत्य :

१) कोरोना व्हारसमुळे वाचक वर्गाला वाचन साहित्याच्या समस्या निर्माण झाल्या.

२) आय.सी.टी.माहिती प्रसारीत करण्याचे प्रभावी माध्यम आहे.

३) ग्रंथालयाने वाचकांच्या वाचन साहित्याचे निर्मुलन आय.सी.टी. च्या माध्यमातून केले.

४) ग्रंथालयाने आय.सी.टी.चा वापर केल्यामुळे वाचन प्रणालीचे सातत्य टिकून राहिले.

प्रस्तुत गृहितकृत्यांच्या पडताळणी करीता पुढील प्रमाणे संशोधन पध्दतीचा आवलंब करण्यात आला.

संशोधन पध्दती :

सदरील शोधनिबंधाच्या तथ्य संकलनाकरीता प्रामुख्याने दुय्यम स्त्रोताचा आवलंब करण्यात आला. या मध्ये प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्याचा वापर करण्यात आला. प्रकाशित साहित्यात विविध, संदर्भग्रंथ, क्रमिक पुस्तके, मासिके, वर्तमानपत्रे, विविध संस्थाचे अहवाल इत्यादी होय. तर अप्रकाशित साहित्यामध्ये एम.फील. पीएच.डी.प्रबंध इंटरनेट, इत्यादी होय.

संशोधन आराखडा :

सदरील शोधनिबंधा करिता वस्तूनिष्ठ तथ्य संकलन करण्याकरिता व संकलीत तथ्यांची गुणवत्ता सिध्द करण्याकरिता प्रामुख्याने वर्णनात्मक संशोधन आराखडयाचा आवलंब करण्यात आला आहे.

विषय विवेचन :

कोरोना व्हारस हा मानवी आरोग्यावर विघातक परिणाम करणारा आहे. कोरोना व्हारसमुळे अनेक व्यक्तींचा बळी गेला आहे. तर अनेक व्यक्तींना अपंगत्व आले आहे. या कोरोना व्हारसचे निर्मुलन करण्याकरिता केंद्र व महाराष्ट्र शासनाने (Lock down)

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

जनता संचार बंदी केली. या संचार बंदीमुळे शाळा, महाविद्यालय, विद्यापीठ, आणि बाजार पेठा बंद झाल्या. त्यामुळे वाचक वर्गाच्या विविध समस्या निर्माण झाल्या या समस्यांचे निर्मुलन करण्याकरिता आय.सी.टी. हे माध्यम प्रभावी ठरले.

माहिती तंत्रज्ञान हे माहितीशास्त्र, संगणकशास्त्र दुरसंचार तंत्रज्ञान आणि व्यवस्थापनशास्त्र यांचे एकत्रीकरण म्हणजे आय.सी.टी.होय. अशा विविध घटकांचा एकत्रीत समावेश होवून माहिती तंत्रज्ञान अस्तित्वात आले. माहिती तंत्रज्ञान हा उच्च तंत्र उद्योगाचा मेंदू असून दुरसंचार हे हृदय आहे माहिती तंत्रज्ञान हे विसाव्या शतकाच्या अखेरीला मानवी बुध्दीची या जगाला मिळालेली सर्वोच देण आहे. असे म्हटले तर ते अतिशयोक्तो ठरु नये.

मानवाने संगणकाच्या मदतीने २१ व्या शतकात प्रवेश केला. यानंतर संपूर्ण जगच त्याला लहान वाटु लागले. संपूर्ण जग मानवाने यानंतर माहितीच्या जाळयात ओढले. या माहितीला तंत्रज्ञानाचे पंख लावून जणू काही त्याने संपूर्ण विश्वावरच मात करुन टाकली. यापूर्वी मानवाच्या दृष्टिकोनातून कोणत्याही शतकातील प्रवेश हा २१ व्या शतकातील प्रवेशा इतका रोमांचकारी व आश्चर्यकारक निश्चितच राहिलेला नसेल. झपाटल्याप्रमाणे मानव नवनवीन शोध लावीत आहे. माहिती तंत्रज्ञानाचे आज कोणते ही क्षेत्र ठेवलेले नाही. ज्या क्षेत्रात संगणकाचा वापर केला जात नाही. एक नवीन क्रांती या निमिताने देशादेशातून निर्माण झाली.

आधुनिक ग्रंथालयाचा उद्देश वाचकांना कमीत कमी वेळेत जास्तीत जास्त वाचन साहित्याची सेवा निर्माण करुन देणे आहे. त्याचबरोबर वाचकामध्ये वाचनाची प्रेरणा निर्माण करुन वाचन संस्कृतीचा विकास घडवून आणणे आहे. हा उद्देश साध्य करण्याकरिता २१ व्या शतकात ग्रंथालय संगणकीकृत होत आहेत. संगणकाच्या वापरामुळे ग्रंथालयाचे कामाकज गतीने व अचूक स्वरुपात होत आहे. संगणकाच्या वापरामुळे ग्रंथालयीन कर्मचारी, वाचक आणि संशोधक यांच्या श्रमात व वेळेत बचत झाली आहे. संगणकीकृत ग्रंथालय वाचकांना आवश्यकते वाचन साहित्य व तत्कालीन माहिती कमीत कमी वेळेत उपलब्ध करुन देत आहेत. आधुनिक ग्रंथालय वाचकांना वाचन साहित्याची सेवा जास्तीत जास्त प्रमाणात कशाप्रकारे देता येईल. या दृष्टीकोनातून नवनवीन उपक्रम राबवित आहेत. राबविल्या जात असलेल्या उपक्रमातील आय.सी.टी.हा एक महत्वपूर्ण उपक्रम होय.

संगणकीकृत ग्रंथालय आय.सी.टी.च्या माध्यमातून ग्रंथालय कार्यशाळा, सेमीनार, कॉन्फरन्स ग्रंथ प्रकाशन कार्यक्रम, ग्रंथ व वाचन साहित्याची खरेदी-विक्री, ग्रंथालय अंतर्गत

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

देव घेव एन.डी.एल. ऑनलाईन ग्रंथालय, ग्रंथ व माहितीची सांकेतीक स्थळे इत्यादी कार्यक्रम संगणकाच्या माध्यातून राबविले जात आहेत. या सर्व कार्यक्रमाचा मुख्य उद्देश वाचकांना ऑनलाईन वाचन सेवा उपलब्ध करुन देणे आहे. या ऑनलाईन वाचन सेवे मध्ये ग्रंथालय, एन.डी.एल. व्हॉटसप ॲप, ऑनलाईन, ग्रंथालय इत्यादी घटकांचा आवलंब केला जात आहे. ग्रंथालयाने विविध माहिती तंत्रज्ञान माध्यमांचा आवलंब प्रामुख्याने कोरोना जनसंचार बंदी या कालावधी मध्ये केलेले दिसून येतो. ग्रंथालयाने कोरोना संचार बंदी या कालावधी मध्ये केलेले दिसून येतो. ग्रंथालयाने कोरोना संचारबंदीच्या काळात तांत्रिक पध्दतीने दिलेल्या माहिती सेवांचे स्वरुप पुढील प्रमाणे नमुद करता येते.

ग्रंथालयीन तांत्रिक पध्दतीच्या माहिती सेवाचे स्वरुप :

१) ग्रंथालय वेबसाईड : ग्रंथालयाने कोरोना जनसंचार बंदी व ऑनलाईन शिक्षण पध्दती कालावधी मध्ये विद्यार्थी, शिक्षक, अध्यापक, वाचक व गरजू व्यक्तीकरिता ग्रंथालयाची स्वतंत्र वेबसाईड सुरु करुन वाचक वर्गाला वाचन साहित्याची सुविधा निर्माण करुन दिली. ग्रंथलयाने आपल्या वेबसाईडवर क्रमीक पुस्तके, संदर्भग्रंथ, वाचन साहित्य इत्यादीची सुविधा निर्माण करुन दिली. त्यामुळे वाचक वर्गानी आपल्या सुविधा व गरजानुसार ग्रंथालय वेबसाईडचा आवलंब करुन वाचन साहित्याची गरज पूर्ण करुन घेतली.

२) ईमेल : ग्रंथालयाने वाचक वर्गाचे ई-मेल घेतलेले असतात. हे ई-मेल संगणकामध्ये सेव्ह करुन ठेवले जातात. ग्रंथालयाने वाचकांच्या ई-मेलचा उपयोग कोरोना जनसंचार बंदीच्या कालावधी मध्ये वाचकांना वाचन साहित्याची सेवा देण्याकरिता केला आहे. संगणकाद्वारे वाचकाच्या ई-मेलवर संदर्भग्रंथ, कथा कादंबऱ्या यांच्या वेबसाईड, वर्तमानपत्रे, वर्तमान पत्रातील महत्वपूर्ण वार्ता तसेच वाचन साहित्य व अध्यावत माहिती वाचकांच्या ई-मेल वर पाठवली. ई-मेलद्वारे प्राप्त झालेल्या वाचन साहित्याचा व अध्यावत माहितीचा वाचकवर्गांनी मोठ्या प्रमाणात लाभ घेतला आहे.

३) मोबाईल : कोरोना कालावधीमध्ये ग्रंथालयीन कर्मचाऱ्यांनी वाचकांच्या मोबाईल नंबरवर वाचन साहित्याच्या वेबसाईड व सांकेतीक स्थळांचे मेसेज पाठवून वाचकांना वाचन साहित्या संबंधीची माहिती उपलब्ध करुन दिली. ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांनी मोबाईलद्वारे वाचकांना वाचन साहित्य उपलब्ध करुन घेण्याची सेवा केली. त्याचबरोबर वाचन साहित्याच्या व्हिडिओ फिती ही पाठवण्याचे कार्य केले. मोबाईलद्वारे मिळालेल्या सांकेतीक स्थळांचा आणि व्हिडिओ फितीचा वाचकांनी मोठया प्रमाणात उपयोग करुन घेतला आहे.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

४) फेसबुक : ग्रंथालयानी कोरोना जनसंचार बंदी कालावीत वाचकाकरिता फेसबुकवर संदर्भग्रंथ, कादंबऱ्या, मासिके, वर्तमान पत्रे इत्यादी वाचन साहित्य अपलोड केले. त्याच बरोबर वाचकाकरिता फेसबुकवर वाचन साहित्याचे व्हिडिओ अपलोड केले. तसेच महत्वपूर्ण ग्रंथाच्या वेबसाईड आणि ग्रंथ याद्या अपलोड केल्या. अशाप्रकारे विविध स्वरुपातील माहिती फेसबुकवर टाकल्यामुळे वाचकांना या माहितीचा लाभ सहज घेता आला. ग्रंथालयाने फेसबुकवर टाकलेल्या वाचन साहित्या मुळे दैनंदिन सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, वैद्यकीय माहिती नागरीकांना सहज प्राप्त करुन घेता आली.

५) व्हॉटसप : व्हॉटसप हे आधुनिक काळात माहिती प्रसारीत करण्याचे गतीशिल ॲप आहे. ह्या ॲपद्वारे मोठ्या प्रमाणात माहिती प्रसारीत करता येते. ह्या माध्यमाचा सरळ व साध्या पध्दतीने वापर करता येतो. हे माध्यम वापरण्याकरिता व्हॉटसप ॲपवर खाते उघडून त्या खात्यामध्ये अनेक व्यक्तीच्या मोबाईल नंबरचा गट तयार करावा लागतो. व्हॉटसप गटावर माहिती अपलोड करुन ती तात्काळ प्रसारीत करता येते. त्याच बरोबर आवश्यक असणारे फोटो, चित्रफिती ही पाठवता येतात.

ग्रंथालयाने व्हॉटसप वर विद्यार्थी, शिक्षक, अध्यापक, संशोधक आणि वाचक यांचे ग्रूप तयार केले आहेत. कोरोना जनसंचार बंदी काळात वाचकांची गैरसोय होवू नये या करिता ग्रंथालयाने व्हॉटसपचा मोठ्या प्रमाणात वापर केला आहे. व्हॉटसप ग्रूपवर संदर्भग्रंथाची यादी, वाचन साहित्याची सांकेतीक स्थळे, वर्तमानपत्रे एम.फिल, पीएच.डी. चे प्रबंध थोर नेत्यांनी आत्मचारित्रे प्रसारीत केली आहेत. या माहिती प्रसारामुळे कोरोना जन संचार बंदीच्या काळात वाचक व अभ्यासक यांची गैरसोय झाली नाही. त्यांना वाचन सुविधा वेळेवर उपलब्ध करुन देण्याचे कार्य ग्रंथालयाने व्हॉटसपद्वारे केले.

६) टयुटर : टयूटर हे आधुनिक काळात माहिती प्रसारित करण्याकरिता विकसीत झालेले प्रभावी ॲप आहे. टयुटर हे इंटरनेटवर वैयक्तीक आकांट असून त्यावर आकांट धारक आवश्यक असणारी माहिती ॲपलोड करुन ती इतरांना वाचण्याकरिता प्रसारीत करतो. टयुटर वर प्रसारीत केलेली माहिती अनेक व्यक्तींना पाहता येते. त्यावर आपल्या प्रतिक्रिया ही टाकता येतात. याच टयूटर ॲपचा ग्रंथालयाने कोरोना जनसंचार बंदीच्या काळात माहिती प्रसारीत करण्याकरिता मोठ्या प्रमाणात केला. ग्रंथालयाने टयूटरद्वारे वाचकांना कथा संग्रह, कादंबऱ्या, ग्रंथ आणि वाचन साहित्य इत्यादीच्या वेबसाईड व ग्रंथाच्या याद्या देवून वाचकांना वाचन साहित्याची सुविधा निर्माण करुन दिली. त्याचबरोबर

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

दैनंदिन परिस्थितीची नागरीकांना माहिती मिळावी या करिता टयूटर वर महत्वाच्या बातम्या व फोटो प्रसारीत केले. त्यामुळे वाचक वर्गाला कोरोना कालावधीत वाचन साहित्याची सुविधा निर्माण झाली.

७) इस्टग्राम : इस्टग्राम माहिती तंत्रज्ञान प्रक्रियातील माहिती प्रसारीत करण्याचे आधुनिक प्रभावी ॲप आहे. इस्टग्राम वर खाते उघडून प्रत्येक व्यक्तीला आवश्यक असणारी माहिती प्रसारीत करता येते. ग्रंथालयाने इस्टेग्रामचा वापर करुन कोरोना कालावधी मध्ये वाचक वर्गाकरिता वाचन साहित्य प्रसारीत केले. इस्टग्राम घेतलेल्या सामाजिक, राजकीय, मनोरंजन, शैक्षणिक, आरोग्य कृषी इत्यादी क्षेत्रातील व्यक्तींना वाचन साहित्य सहज उपलब्ध झाले. त्याच बरोबर वाचक वर्गानेही त्यांचेकडे असणारी माहिती इस्टग्राम वर टाकली. त्यामुळे माहिती प्रसारीत होण्यास गती मिळावी.

ग्रंथालयाने कोरोना काळात वाचकांना वाचन साहित्याची सुविधा करण्याकरिता इस्टग्राम ॲपचा उपयोग मोठ्या प्रमाणात केला. ग्रंथालयाने इस्टग्रामवर दैनंदिन बातम्या फोटो विविध विचारवंताच्या मुलाखाती शासनाचे परिपत्रक आणि वाचन साहित्य प्रसारित केले. त्यामुळे वाचकांना वाचन साहित्याची उपलब्धता मोठ्या प्रमाणात झाली.

८) युटयूब : माहिती तंत्रज्ञान प्रक्रियातील माहिती प्रसारीत करण्याच्या प्रक्रियातील युटयूब हे एक प्रभावी ॲप आहे. युटयूबवर मोठ्या प्रमाणावर माहिती प्रसारीत करता येते. त्याच बरोबर ज्या व्यक्तींना जी माहिती आवश्यक असते ती माहिती सहज उपलब्ध करुन घेता येते. त्या करीता आपल्या मोबाईल मध्ये युटयूब ॲप डाउनलोड करुन घ्यावे लागते. या युटयूबचा वापर ग्रंथालयांनी कोरोना कालावधी मध्ये वाचकांना वाचन साहित्याची सुविधा पुरवण्याकरिता मोठ्या प्रमाणावर केला. ग्रंथालयाने युटयूबवर ग्रंथ कादंबऱ्या वृतपत्रातील महत्वपूर्ण बातम्या आणि वाचन साहित्य प्रकाशीत केले. त्याच बरोबर महत्वपूर्ण फोटो, विचारवंताची मते प्रसारीत केले. त्यामुळे वाचकांना वाचन साहित्याची मोठ्याप्रमाणात सुविधा निर्माण झाली.

ग्रंथालय माहिती तंत्रज्ञान सेवाचे महत्व :

ग्रंथालय वाचकांना स्वगृही व हव्यात्यावेळी वाचन साहित्याच सुविधा मिळावी या करीता माहिती तंत्रज्ञानाच्या विविध घटकांचा आवलंब करीत आहे. या माहिती तंत्रज्ञानाच्या घटकामुळे वाचकांना वाचन साहित्याची सुविधा सहज मोठ्या प्रमाणत उपलब्ध होत आहे. ग्रंथालयाने माहिती तंत्रज्ञानाच्या घटकांचा वापर करुन प्रसारीत केलेल्या माहितीचा उपयोग विद्यार्थी, शिक्षक, अध्यापक, संशोधक, वाचक यांना होत आहे. तसेच ज्या वाचकांना

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

माहिती तंत्रज्ञानाच्या विविध माध्यमातून माहिती मिळेल. त्याच बरोबर ग्रंथालयात माहिती तंत्रज्ञानाची उपकरणे आणि नियोजन यांचे महत्व शैक्षणिक संस्था, सामाजिक संस्था, आणि सेवाभावी संस्थांना पटेल. त्यामुळे ग्रंथालय माहिती तंत्रज्ञानाच्या विविध माध्यमांचा विकास घडून येईल.

२१ व्या शतकात ही अनेक शाळा, महाविद्यालय, पारंपरिक पध्दतीनेच ग्रंथालय चालवित आहेत. त्याच बरोबर ग्रामीण भागातील सार्वजनिक ग्रंथालयात संगणक, इंटरनेट ची सुविधा निर्माण झालेली नाही. अशा अविकसनशिल ग्रंथालयाला संगणक, इंटरनेट आणि माहिती तंत्रज्ञानाची विविध माध्यमे यांची जाणीव होईल. त्याचबरोबर ग्रामीण भागातील सार्वजनिक ग्रंथालयाना संगणक, इंटरनेट चे महत्व पटेल ते माहिती तंत्रज्ञानाद्वारे वाचन साहित्याची वाचकांना सेवा देतील. त्यामुळे अविकसित ग्रंथालयांना विकासाची दिशा मिळेल.

सारांश :

माहिती तंत्रज्ञानाची विविध माध्यमे विपूल प्रमाणात माहिती प्रसारीत करीत आहेत. ग्रंथालयांनी कोरोना काळामध्ये माहिती व वाचन साहित्याची सुविधा वाचकांना देण्याकरिता माहिती तंत्रज्ञानाच्या माध्यमांचा मोठ्या प्रमाणावर वापर केला आहे. माहिती तंत्रज्ञानाच्या विविध माध्यमाद्वारे विद्यार्थी, शिक्षक, अध्यापक, संशोधक, वाचक यांना अध्ययन पुस्तीका, संदर्भग्रंथ, कथा, कादंबऱ्या वाचन साहित्य इत्यादीची सुविधा निर्माण करुन दिली. त्यामुळे ग्रंथालयीन सेवा प्रक्रियेत माहिती तंत्रज्ञानाचे महत्व अधिक प्रभावीपणे विकसीत झालेले दिसून येते.

संदर्भ :

१) घाटोळे रा.ना., संशोधन पध्दती व तत्वे, श्रीमंगेश प्रकाशन, नागपूर २००५.

२) काचोळे दा.घो. सामाजिक संशोधन पध्दती कैलाश पब्लिकेशन्स औरंगाबाद २००६.

३) अहिरराव उज्वला जितेंद्र माहिती तंत्रज्ञान चिन्मय प्रकाशन औरंगाबाद २०१०.

४) एम.एस.सी. आय.टी. महाराष्ट्र राज्य माहिती तंत्रज्ञान प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम २०१६.

५) Bhakare Ashutosh. S. Course on computer concepts. Open publication Aurangabad.2014

६) दैनिक लोकमत २४/०५/२०२१ पृष्ठ क्र. ०२.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Present and Future Initiatives in Academic Libraries

Vasundhara Arts & Science College
GHATNANDUR

EDITORS

Dr. Jagdish Narharrao Kulkarni
Mr. Rajesh Baliram Gore
Dr. Sheshnarayan Laxmanrao Jadhav
Dr. Shivaji Narayanrao Sontakke

ASSOCIATE EDITORS

Dr. R. R. Paithankar
Dr. Sachin Narayanrao Chobe
Mr. Ajit Janardan Rangdal
Dr. Vishnu Manohar Pawar

In Association with *Maharashtra University and College Librarians Association*

Atharva Publications

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Atharva Publications

Present and Future Initiatives in Academic Libraries

National Conference Papers
PAFIHAL 2022

Copyright © All rights reserved.

ISBN : 978-93-91712-92-1

Publisher & Printer
Mr. Yuvraj Mali
Atharva Publications
Dhule : 17, Devidas Colony,
Varkhedi Road, Dhule - 424001.
Contact : 9405206230
Jalgaon : Shop No. 2, 'Nakshatra' Apt., Housing Society,
Shahu Nagar, Opp. Teli Samaj Mangal Karyalaya,
Jalgaon - 425001.
Contact : 0257-2253666, 9764694797
Email : atharvapublications@gmail.com
Web : **www.atharvapublications.com**

In Association with
Maharashtra University and College Librarians Association

First Edition
17 February 2022

Type Setting
Atharva Publications

Price
Rs. 950/-

Disclaimer: *The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in the volume / book. The publishers or editors / Maharashtra University and College Librarians Association do not take responsibility for the same in any manner. Errors if any purely unintentional and readers are requested to communicate such error to the publishers or editors to avoid discrepancies in future.*

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

INDEX

Section I
Initiatives in Management of Academic Libraries and Collection Development

- **Initiativesin Collection Development in Academic Libraries** 3
  Rajmane M.S.
- **Tactics to Enrich Library Collection: With Special Reference to Subject Education** 7
  Dr. Lathkar R. A., Dr .Kulkarni J. N.
- **Collection Devlopment Policy in Library** 14
  Dr. Shelke Bhausaheb B.
- **Initiatives in Collection Development Changing: Role and Innovative Services** 17
  Dr. Mene P. B.
- **Collection Development Policy : with Special Reference to Electronic Era** 19
  Dr. Jadhav Anil Vyankatrao, Dr.Kulkarni Jagdish N.
- **ग्रंथसंग्रह विकासाचे धोरण : गरज आणि महत्व** 21
  अंबादास वसंत खिलारे
- **Role of Librarians in Knowledge Management** 24
  Dr. Sontakke Shivaji Narayanrao
- **Knowledge Management in Academic Libraries** 27
  Mr. Guldagad Kiran Dhondiram
- **Knowledge Management in Academic Libraries** 31
  Shri. Gajmal Arjun Bandu
- **Research Contribution of Knowledge Management among Various Countries: A Study** 34
  Shankar A. Dhande, Dr. Rajeev R. Paithankar
- **A Critical Study of Periodicals and Newspaper Section of KKM College** 40
  Dr.Chobe Sachin
- **Financial Management : Financial Perspective in IT Environment** 43
  Dr.Deshmukh S.B., Mr. Waghmare R.K., Dr. Kulkarni J. N.
- **Tools for Marketing of Services of Library: An Overview** 47
  Dr. Kolambikar Ashok, Mr. Wani Rakesh Sopan, Mr.Zope Shirish Amrutrao
- **Marketing of Library and Information Services** 52
  Dr.Pawar V. M., Dr.Pensalwar L. B., Mr. Gore R. B.
- **E-Marketing of Library and Information Services** 56
  Shankpale Jyoti Ramesh
- **Marketing of Library E-Resources** 59
  Sangita Gangaram Utekar, Dr. Sudhakar B.Telke
- **Total Quality Management (TQM) in Libraries** 62
  Dr. Kashinath Rama Rathod
- **Marketing of Information Services in Academic Libraries** 64
  Dr. Bharat R. Lokalwar

Section 2
Initiatives in Academic Library Modernization, User Education and Services

- **Open Source Software's for Library Automation** 69
  Sanjay Bhagwat Idhole

Vasundhara Arts & Science College, GHATNANDUR

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519
Principal

- **Emerging Trends in Academic Library Services: A Perspective of Library Automation and Management** 71
  Prof. Balu Chindha Gharate
- **Open Source Software in Library** 75
  Shri. Hambir Raju Maroti
- **Digital Library: Need for the Today's Era** 78
  Mr. Yuvraj B Andhorikar, Dr. Shobha R Sulsule
- **Development of Digital Resources: A case Study of Science College Library** 82
  Naikwade Satish, Jadhav S. L
- **Present and Future Components of Digital Libraries in Private and Government Education Colleges of SRTM University in The Marathwada Region** 86
  Kalyan Dattatray Yadav
- **E-Resources and E-Services in IIM Nagpur** 90
  Dr. Telgane Kishan Kondia
- **Electronic Resources** 93
  Dr. Dhumal Asmita Shrinivas
- **E-Resources Management** 95
  Mr. Shinde Sainath Bhanudas, Dr. Pawar Ganpat Ramsing
- **आधुनिक ग्रंथालयातील ई-संसाधनाचे मूल्यमापन** 97
  प्रा. सुनील राजेश्वरराव आंबटवाड, प्रा. राजेश बळीराम गोरे
- **Benefits of Usages of Modern Information and Communication Technology in Library and Information Services** 103
  Dr. Ghogare Govind
- **ICT Based Eligibility for Library Supporting Staff: a General Observations and Suggestions** 107
  Mr. Bansod Nagsen
- **ग्रंथालय सेवांमध्ये माहिती तंत्रज्ञान** 109
  प्रा. माधव गोरख घोडके
- **An Analytical Study of ICT Based Library and Information Services in Maharashtra University of Health Science Nashik** 113
  Dr. Ghogare Govind S., Pawar Nilesh Prabhakarrao
- **Changing Scenario of Information Technology and Library Automation** 116
  Dr. Kadam Shankar P.
- **Use of ICTs: for Access of Grey Literature in Medical College Libraries** 120
  Dr.Khandekar Ganesh Bajirao
- **Users View on ICT Based Services of Library and Information Centres in Indian Universities Libraries** 126
  Dr. Heera N. Mortale
- **Application of Library 3.0 on Modern Library Services** 131
  Ravindra R Mangale, Dr. Veena Kamble
- **ग्रंथालयातील संदर्भ सेवा : एक दृष्टीक्षेप** 134
  श्री. केसरकर एम. पी.
- **Web Based Library Services in Gulbarga University, Gulbarga** 139
  Dr. Bidve Maruti Shivajirao
- **सद्यस्थितीत- आधुनिक ग्रंथालय काळाची गरज** 143
  प्रा.विलास गोपीनाथराव किर्दंत, प्रा.मोरे जयंत हंसराज
- **Modernisation of Academic Libraries** 147
  Mr. Amol Bhaudas Meshram
- **Academic Libraries in 21st Century** 150
  Prof. Suryawanshi Kamlakar

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

सद्यस्थितीत– आधुनिक ग्रंथालय काळाची गरज

प्रा.विलास गोपीनाथराव किर्दत
ग्रंथपाल,
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदुर, ता.अंबाजोगाई, जि.बीड

प्रा.मोरे जयंत हंसराज
ग्रंथपाल,
जनविकास महाविद्यालय, बनसारोळा, ता. केज, जि. बीड

GHATNAN

प्रस्तावना :

सद्यस्थितीत म्हणजेच एकविसाव्या शतकातविज्ञान व तंत्रज्ञानचा मोठ्या प्रमाणात विकास झालेला दिसून येतो. हा विकास सर्वच क्षेत्रात झालेला आहे. याला ग्रंथालय हे अपवाद असूच शकत नाही. मात्र पूर्वी ग्रंथ हे हस्तलिखित स्वरूपात असल्यामुळे ते सर्वसामान्य वाचकापर्यंत पोहोचत नसत. कालांतराने मुद्रण कलेचा शोध लागला. यामुळे अनेक हस्तलिखित ग्रंथाचे पुस्तक रूपाने प्रकाशन होऊ लागले. ही पुस्तके वाचकांचे केंद्रस्थान बनत गेले. यामुळे मुद्रणकलेचा देखील विकास होत गेला. यातून अनेक ग्रंथांचे नव्याने मुद्रण करण्यात आले. अशा ग्रंथाचे वाचन, जतन व संरक्षण करण्यासाठी ग्रंथालय ही संकल्पना अस्तित्वात आली. मग अशा ग्रंथालयात अनेक प्रकारची, अनेक विषयाची अनेक ग्रंथ वाचकापर्यंत पोहोचवली जात होती. तसेच या ग्रंथालयातून अनेक दुर्मिळ ग्रंथांचे जतन व संरक्षण केले जात आहे. मात्र आजच्या माहिती तंत्रज्ञानाच्या युगामध्ये ग्रंथालयाची संकल्पना बदलत आहे. ग्रंथालयात आता फक्त छापील पुस्तकेच न ठेवता आजच्या काळातील माहिती तंत्रज्ञानाचा वाढता उपयोग लक्षात घेऊन आधुनिक साहित्य आणि संसाधने वापरावी लागतील. यामध्ये ई बुक्स, ऑडिओ बुक्स, ई-नियतकालिके, ई-न्युज पेपर, ई-प्रबंध, सी.डी, वेब ब्लॉग, विकिपीडिया, सोशल नेटवर्क यांचा समावेश होतो. वरील आधुनिक साधने ग्रंथालयात वापरून ग्रंथालय डिजिटल स्वरूपात करणे ही काळाची गरज झाली आहे.

उद्दिष्टे :

१) आधुनिक ग्रंथालयाचे स्वरूप समजून देणे.
२) ग्रंथालयातील आधुनिक साधनांची माहिती करून देणे.
३) आधुनिक ग्रंथालयाचे महत्त्व पटवून देणे.

आधुनिक ग्रंथालय संकल्पना :

ग्रंथ संग्रहाचे स्थान म्हणजे ग्रंथालय. डॉ.एस.आर. रंगनाथन यांच्या मते, ग्रंथालय ही लोकशाही मूल्य जोपासणारी सार्वजनिक संस्था आहे. ज्ञान व माहिती संग्रहण व संप्रेषण हा ग्रंथालयाचा मूळ उद्देश आहे. या ग्रंथालयतूनच शिक्षक, विद्यार्थी व वाचकापर्यंत अनेक ग्रंथांची देवाण-घेवाण होत असते. मानवाच्या जीवनात ग्रंथ या सारखा दुसरा गुरू नाही असे म्हटले जाते. मानवाचे जीवन समृद्ध करण्यामध्ये ग्रंथ महत्त्वाचे आहेत कारण ग्रंथ वाचनातूनच व्यक्तीला बौद्धिक खुराक मिळत असतो. उत्तम पुस्तक वाचनाने वाचकाला आनंद मिळत असतो, मनाची प्रसन्नता लाभते, व्यक्तिमत्त्वाचा विकास होतो. परंतु आजच्या आधुनिक काळात पुस्तके, ग्रंथ मोठ्या प्रमाणात ग्रंथालयात उपलब्ध आहेत. मात्र विद्यार्थी, सर्वसामान्य वाचक यांना सार्वजनिक ग्रंथालयात ग्रंथालयाच्या वेळेप्रमाणे जाता येत नाही. त्याच प्रमाणे महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांना ग्रंथालयातून हव्या त्या वेळेस हवी ती पुस्तके मिळण्यास अडचणी येतात. तसेच संशोधन करणाऱ्या संशोधकाला संशोधन करण्यासाठी अनेक ग्रंथाची आवश्यकता असते. संशोधनासाठी लागणारी सर्वच ग्रंथ हे एकाच ग्रंथालयात मिळत नाहीत अशावेळी संशोधन कर्त्याला अनेक ग्रंथालयात जावे लागते यावेळी त्याचा वेळ व पैसा मोठ्या प्रमाणात खर्च होत असतो.

ग्रंथालयातील पुस्तके हे कागदावर छापील स्वरूपात असल्यामुळे कालांतराने कागदावरील अक्षरे अस्पष्ट होत जातात, कागद फाटक जातात. ग्रंथालय लहान असेल तर ग्रंथालयात ग्रंथ ठेवण्यासाठी जागा अपुरी पडते. पुस्तकासाठी लागणाऱ्या पेपरसाठी मोठ्या प्रमाणात वृक्षतोड करावी लागते. मुद्रणासाठी मोठ्या प्रमाणात खर्च येत असतो, सर्वात महत्त्वाचे म्हणजे पुस्तक मुद्रणामध्ये झालेली चूक दुरुस्त करता येत नाही. अशा छापील पुस्तकांमध्ये काळानुसार बदल करता येत नाही. अशा ग्रंथालयाच्या संदर्भातील अनेक समस्यांचा अभ्यास करून

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431517

त्या सोडवण्यासाठी डिजिटल ग्रंथालय (आधुनिक ग्रंथालय) संकल्पना विकसित होत आहे.

डिजिटल ग्रंथालय व्याख्या :

१) बर्मींग यांच्या मते, मल्टिमीडिया डिजिटल स्वरूपातील माहितीच्या जगभर वेगाने विस्तारित असलेल्या जाळ्यातील माहिती प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष शोधण्याची सुविधा पुरविणाऱ्या संरचनेला डिजिटल ग्रंथालय असे म्हणतात.

२) टेरेन्स स्मिथ यांच्या मते, शास्त्रशुद्ध पद्धतीने तयार केलेले व डिजिटल तंत्रज्ञानाचा वापर करून त्यांची व्यवस्थित मांडणी करून ते वापरण्यासाठी विविध पद्धतीने व विविध अंगाने वापरण्याजोग्या मार्गासहित उपलब्ध डिजिटल साहित्य ग्रंथ होय.

आधुनिक ग्रंथालयातील वाचन साहित्य :

१) ई –बुक्स :

ई–बुक्स म्हणजे एक इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक होय. ही पुस्तके वाचकाला डेस्कटॉप संगणक, लॅपटॉप, टॅबलेट आणि स्मार्टफोनसह कोणत्याही कॉम्प्युटर डिवाइस वर वाजता येतात. ही पुस्तके ऑनलाइन खरेदी केल्यावर ऑनलाइन किंवा डाऊनलोड करून वाचता येतात. शिक्षक, विद्यार्थी, संशोधक व वाचकांमध्ये ही पुस्तके वाचनाकडे कल वाढत आहे कारण ही पुस्तके छापील पुस्तकापेक्षा कमी किमतीत मिळतात. तसेच हवेत्या वेळेस व हवे तेव्हा सहजतेने वाचू शकतात.

२) ऑडिओ बुक्स :

ई–बुक्स प्रमाणे ग्रंथालयात ऑडिओ बुक्स ही उपलब्ध आहेत. ही पुस्तके ई–बुक्स पेक्षाही वाचकांच्या अधिक पसंतीस उतरत आहेत. कारण ही पुस्तके वाचण्यासाठी कॉम्प्युटर, लॅपटॉप किंवा मोबाईल समोर धरण्याची गरज नसते तर ही पुस्तके आपण कोणतेही काम करत सहजतेने ऐकू शकतो. तसेच ही पुस्तके मोबाईलवर वेगवेगळ्या ऑडिओ बुक्स प द्वारे देखील उपलब्ध झालेली आहेत. यामुळेच ही पुस्तके ऐकण्या कडे शिक्षक, विद्यार्थी व साहित्यिक वाचक यांचा कल वाढत आहे.

३) ई–जर्नल्स् :

ई–बुक्स प्रमाणेच ई–जर्नल्स ही आता ऑनलाईन उपलब्ध झालेले आहेत. तर काही जर्नल्स हे मबर्थ डिजिटलफ आहेत. अशी जर्नल्स पूर्णपणे वेबवर आणि डिजिटल स्वरुपात प्रकाशित केली जातात. तर काही जर्नल्स ही छापील व ई स्वरूपात प्रकाशित आहेत. ऑनलाइन जर्नल, लेख इलेक्ट्रॉनिक दस्तऐवजाचा एक विशिष्ट प्रकार आहे. ही जर्नल्स काही विनाशुल्क वाचता येतात तर काही सदस्यत्व घेऊन वाचता येतात.

४) ई–वर्तमानपत्र :

छापील वर्तमानपत्र प्रमाणेच ई–वर्तमानपत्र देखील ऑनलाइन वाचता येतात. वर्तमानपत्र हे स्वतंत्र वृत्त किंवा मुद्रित वर्तमानपत्राची ऑनलाइन आवृत्ती असते. ऑनलाइन वर्तमानपत्र आल्यामुळे ग्रंथालयातील अनेक सदस्यांना एकाच वेळी अनेक वर्तमानपत्र वाचता येऊ लागली आहेत. यासाठी शिक्षक, विद्यार्थी, संशोधक व ग्रंथालय सभासदांना ग्रंथालयात जाण्याची आवश्यकता नाही. ग्रंथपाल एकाचवेळी या सर्वांना सर्व वर्तमान पत्रे ऑनलाइन पद्धतीने वाचनास देऊ शकतात. या ऑनलाइन वृत्तमानपत्रमुळे प्रस्थापित वर्तमानपत्रांना मुद्रण व कागदासाठी लागणारा खर्च देखील कमी झालेला आहे. या ऑनलाईन वर्तमानपत्रांना छापील वृत्तपत्रप्रमाणेच मानहानी गोपनीयता व कॉपीराइट ची बंधने आहेत.

५) N-LIST :

N-LIST åhUOo National Library Information Service Inforstructure for Seholarly Content. विद्यापीठ अनुदान आयोगाने N-LIST हा उपक्रम महाविद्यालयीन ग्रंथालयासाठी उपलब्ध करून दिला आहे. N-LIST च्या माध्यमातून खपषेपशीं व इंटरेस्ट या दोन कन्सोटीएम याद्वारे उपलब्ध काही E-Resources full Text स्वरूपात प्राप्त केला जाऊ शकतो. यामध्ये दहा प्रकाशकाची २२०० पेक्षा जास्त E-Journals आणि

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519

२९८ प्रकाशकांची ५९७४६ E-Books व भारतीय प्रकाशकांच्या नियतकालिकातील लेख उपलब्ध आहेत. N-LIST विद्यापीठ ग्रंथालयासाठी व संशोधक विद्यार्थ्यांना संशोधनासाठी उपलब्ध होत होती. मात्र ती आता महाविद्यालयातील ग्रंथालयात ही उपलब्ध झाली आहे.

GHATNANDUR Vasundhara

ग्रंथालयातील इतर आधुनिक वाचन साहित्य :

आधुनिक ग्रंथालयातील इतर वाचन साहित्यमध्ये फेसबूक, व्हॉट्सऍप, ब्लॉग, ट्विटर, ई-नियतकालिके, ई-प्रबंध इत्यादीचा समावेश होतो. ग्रंथालय डिजिटल असतील तर वरील वाचन साहित्यातून शिक्षक, विद्यार्थी, संशोधक व साहित्याची आवड असणाऱ्या वाचकांना हवी ती पुस्तके, कादंबरी, कथा, कवितासंग्रह, मासिके, वर्तमानपत्र, नियतकालिके, प्रबंध इत्यादी कॉम्प्युटर, लॅपटॉप, मोबाईल मध्ये डाऊनलोड करून केव्हाही कोठेही आणि कधीही सहज वाचता येतात.

आधुनिक ग्रंथालयाचे महत्व :

१) डिजिटल ग्रंथालयामुळे दुर्मिळ ग्रंथांचे जतन, संरक्षण करून ते वाचकापर्यंत उपलब्ध करून देता येतात.

२) आधुनिक ग्रंथालयामुळे शिक्षक, विद्यार्थी, संशोधक, साहित्य वाचकांना कोणत्याही प्रकारच्या ज्ञानाची केव्हाही व कोणत्याही ठिकाणी सहज उपलब्धता होऊ शकते.

३) आधुनिक ग्रंथालयामुळे संशोधकाला संशोधनासाठी लागणारी पुस्तके, संदर्भग्रंथ ग्रंथालयात न जाता एका संकेत स्थळावर उपलब्ध होऊ शकतात.

४) डिजिटायझेशन ग्रंथामुळे प्रिंटिंग व कागदाचा खर्च कमी होत आहे, तसेच अशा पुस्तकांमध्ये कोणत्याही पानावरील मजकूर काढून टाकता येतो किंवा त्यात हवा असलेला मजकूर घालता येतो.

५) डिजिटल ग्रंथालयातील पुस्तके, माहिती ही एका ठिकाणाहून दुसऱ्या ठिकाणी सहज पाठवता येते.

६) डिजिटल ग्रंथालयातील वाचन साहित्य मल्टीमीडिया स्वरूपात असल्यामुळे ते कोठेही सहज उपलब्ध होते यासाठी तिसऱ्या व्यक्तीची गरज नसते.

७) ग्रंथालयातील छापील पुस्तकाला वाचकांपर्यंत पोहोचवण्यास ग्रंथपालाला मर्यादा येतात पण डिजिटल पुस्तके एकाच वेळी शिक्षक, विद्यार्थी, संशोधक व साहित्यिक वाचू शकतात.

समारोप :

आधुनिक ग्रंथालय की भविष्य काळाची गरज आहे. ग्रंथालयात डिजिटायझेशन चे काम खर्चिक असले तरी त्यापासून मिळणारे फायदे भविष्याच्या दृष्टीने महत्त्वाचे आहेत. यामुळेच आधुनिक युगात ग्रंथालयाची संकल्पना बदलत आहे. विद्यार्थ्यांमध्ये, वाचकांमध्ये वाचनाची आवड निर्माण करावयाची असेल, तर त्यासाठी प्रत्येक ग्रंथालयाचे संगणकीकरण होऊन पारंपारिक ग्रंथालयाबरोबरच आधुनिक सेवा सुविधा विद्यार्थ्यांना, वाचकांना देणे महत्त्वाचे आहे. यासाठी विद्यार्थी, साहित्यिक वाचक यांना ग्रंथालयाकडे आकर्षित करण्यासाठी विविध कल्पक योजना राबवल्या जाव्यात. जसे आधुनिक ग्रंथालयाची ओळख वाचकाला करून देणे, ग्रंथालयाचा स्वतः वापर कसा करावा यासाठी मार्गदर्शन करणे, ग्रंथप्रदर्शन, परिसंवाद, व्याख्याने, प्रत्येक ग्रंथालयाची स्वतःची वेबसाईट तयार करणे इत्यादी. यासाठी ग्रंथपालाने विद्यार्थ्यांना, वाचकांना अपेक्षित मदत करणे आवश्यक आहे. कारण ग्रंथपाल हाच वाचक व ग्रंथालय यातील महत्त्वाचा दुवा असतो. म्हणून ग्रंथपालाने आधुनिक काळात होणाऱ्या बदलाबरोबर ग्रंथालयातही बदल करणे आवश्यक आहे. तात्पर्य या आधुनिक काळात ग्रंथालयाची संकल्पना बदली असून ग्रंथालय हे माहितीचे देवाण-घेवाण करण्याचे साधन झाले आहे आणि शिक्षक, विद्यार्थी, संशोधक व वाचक ग्रंथालयातून छापील पुस्तकाबरोबरच आधुनिक वाचन साहित्याची मागणी करत आहेत.

संदर्भ ग्रंथ :

१) अनिल चिकाटे, हितेश ब्रिजवासी, शर्मिला गाडगे, 'वाचन संस्कृती आणि बदलते आयाम', अकॅडमिक बुक्स पब्लिकेशन्स, जळगाव.

२) पाटील एस.के., 'डिजिटल ग्रंथालय आधुनिक काळाची गरज', नाशिक २००४.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519

३) फडके डी.एन., 'संगणकीकरण-आधुनिकीकरण', युनी, प्रका. २००७, पुणे.
४) एस.पी.पवार, सौ.सविता भडकते, आर.जी.पवार, सौ.सुनंदा जाधव, एम.व्ही. कुलकर्णी, मग्रंथालय व माहितीशास्त्रफफडके प्रकाशन, कोल्हापूर २००५
५) डॉ.उद्धव आघाव, मग्रंथायनफ, न्यू मॅन पब्लिकेशन, परभणी २०१२
६) पाटील एन. बी., 'डिजिटल लायब्ररी : एक नवे क्षितीज', ज्ञानगंगोत्री २००८
7) https//www. Wikimedia. org.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Vasundhara Arts & Science College GHATNANDUR

Impact of ICT in Teaching, Learning and Evaluation Process

Editors

Mr. Gopal D. Sagar
Dr. Millind N. Gaikwad
Dr. Gopal K. Kakade

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,08850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Impact of ICT in Teaching, Learning and Evaluation Process

© Mr. Gopal D. Sagar
Dr. Millind N. Gaikwad
Dr. Gopal K. Kakade

❖ Publisher :
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed (Maharashtra)
Pin-431126, vidyawarta@gmail.com

❖ Printed by :
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
www.vidyawarta.com

❖ Page design & Cover :
H.P. Office (Source by Google)

❖ Edition: Dec. 2021

ISBN 978-93-85882-33-3

❖ Price : 200/ -

All Rights Reserved, No part of this publication may be reproduced, or transmitted, in any form or by any means, electronic mechanical, recording, scanning or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner. Responsibility for the facts stated, opinions expressed. Conclusions reached and plagiarism, If any, in this volume is entirely that of the Author. The Publisher bears no responsibility for them. What so ever.Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

24) IMPACT OF ICT ON SOCIAL SCIENCE RESEARCH
MR.NAGORAO WAGHMARE, Kille Dharur ||192

25) Impact of ICT in Teaching, Learning and Evaluation Process
KALYANI R. DHANEDHAR PAGDE ||195

26) The WWW Journey of Web 1.0 to 3.0
Mr. Pramod Nagnath Sarafe, Udgir. ||202

27) The Impact of ICT in Rural Education
Mangilal Ganpat Rathod, Kille-Dharur ||210

28) USE OF E-CONTENT IN TEACHING ENGLISH LITERATURE : A CRITICAL STUDY
Dr. D. N. Ganjewar, Kille-Dharur Dist. Beed ||214

29) हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में
प्रा. डॉ. जयंत ज्ञानोबा बोबडे, परभणी ||222

30) सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी
डॉ. नितीन कुंभार, किल्ले धारुर जि. बीड ||232

31) ग्रंथालयामध्ये आय. सी. टी. चा वापर
प्रा. किर्दत विलास गोपीनाथराव डॉ. घोगरे गोविंद सूर्यभान, घाटनांदूर ||238

32) Google form : एक प्रभावी मूल्यमापन साधन
श्री. गोपाळ सगर, डॉ. गोपाळ काकडे, श्री. गहिनीनाथ गोयेकर, किल्लेधारूर जि. बीड ||246

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Arts & Science College GHATNANDUR

31

ग्रंथालयामध्ये आय. सी. टी. चा वापर

प्रा. किर्दत विलास गोपीनाथराव
ग्रंथपाल,
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, ता. अंबाजोगाई, जि. बीड.

डॉ. घोगरे गोविंद सूर्यभान
ग्रंथपाल,
लोकमान्य महाविद्यालय, सोनखेड, ता. लोहा, जि. नांदेड.

****

गोषवारा:

सदरील संशोधन हे माहिती संप्रेषण आणि तंत्रज्ञान कशाप्रकारे ग्रंथालयामध्ये आपली भूमिका बजावते आहे या संदर्भात आहे. आयसीटीमुळे शैक्षणिक ग्रंथालयांचे स्वरूप बदलले आहे. शैक्षणिक ग्रंथालयाचा संकरित संदर्भ देण्यासाठी, डिजिटल आणि आभासी ग्रंथालय यासारख्या विविध संज्ञा वापरल्या जातात. आयटी आधारित सेवा वापरकर्त्यांच्या सर्व गरजा योग्य मार्गाने, योग्य वेळी आणि योग्य वापरकर्त्याने पूर्ण करतात. आयसीटीने संपूर्ण जग ग्लोबल व्हिलेजमध्ये बदलले आहे. आज आयसीटी हा जगभरातील माहितीचा प्रवेश, माहितीचा प्रसार आणि माहिती संप्रेषणाचा महत्त्वाचा घटक आहे. लायब्ररींसाठी, आयसीटी संसाधनांचे व्यवस्थापन, गृहनिर्माण ऑपरेशन्स तसेच सेवा वितरीत करण्याच्या पद्धतीमध्ये अत्यंत बदल करत आहे. वापरकर्त्याना कोणत्याही मानवी सहभागाशिवाय अनेक सेवांचा लाभ घेण्याचे अधिकार दिले आहेत. आज ग्रंथपालांना बदलाचे

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

आव्हान स्वीकारावे लागेल आणि वेगाने बदलत असलेल्या हाय–टेक समाजाचे माहिती व्यावसायिक म्हणून काम करावे लागेल.

परिचय:

आयसीटीच्या विकासामुळे आणि अनुप्रयोगामुळे, ग्रंथालयांची संपूर्ण परिस्थिती बदलली आहे. पारंपारिक ग्रंथालयांकडून संकरित ग्रंथालयांकडे वळत आहे. ज्ञानाच्या विश्वात विविध नावांनी कार्यरत असलेल्या ग्रंथालयांचा उदय आपण पाहतो. ही लायब्ररी स्वयंचलित लायब्ररी, इलेक्ट्रॉनिक लायब्ररी, डिजिटल लायब्ररी किंवा सर्वव्यापी आभासी लायब्ररी आहेत. वेब वातावरणात लायब्ररी २.० ची संकल्पना उदयास आली आहे. ही सर्व ग्रंथालये साहित्य संपादन करण्यापासून माहितीचा प्रसार करण्यापर्यंतच्या क्रियाकलापांसाठी विविध माहिती तंत्रज्ञान अनुप्रयोग वापरत आहेत. डिजिटल लायब्ररीची व्याख्या ''संबंधित सेवांसह माहितीचे व्यवस्थापित संग्रह जेथे माहिती डिजिटल स्वरूपात संग्रहित केली जाते आणि नेटवर्कवर प्रवेश करता येते'' अशी केली जाऊ शकते. माहिती आणि संप्रेषण तंत्रज्ञानाने जागतिक स्तरावर ग्रंथालय सेवांचा कायापालट केला आहे. बर्याच वर्तमान माहितीची नोंद इलेक्ट्रॉनिक स्वरूपात केली जाते, आयसीटीने ग्रंथपालांच्या त्यांच्या कर्तव्ये पार पाडण्यात जसे की कॅटलॉगिंग, संदर्भ सेवा, परिसंचरण व्यवस्थापन, मालिका नियंत्रण इत्यादींमध्ये खूप मोठे योगदान दिले आहे. आयसीटीने खालील विशिष्ट गोष्टींमध्ये ग्रंथालयासाठी योगदान दिले आहे.

माहिती तंत्रज्ञानाचे फायदे:

लायब्ररी ऑपरेशन्समध्ये प्रयत्न आणि कामाचे डुप्लिकेशन टाळण्यास मदत करतात. लायब्ररी नेटवर्कद्वारे सहकार्य आणि संसाधने सामायिकरण सुलभ करते. नवीन सेवा सादर करण्यास आणि विद्यमान सेवा सुधारण्यास मदत करते. विविध लायब्ररी ऑपरेशन्सच्या एकत्रीकरणास अनुमती देते.

जलद माहिती संप्रेषण सुलभ करते. सेवांची गुणवत्ता आणि श्रेणी वाढवण्यास मदत करते. ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांचे मनोबल आणि

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Vasundhara Arts & Science College GHATNANDUR

प्रेरणा वाढते. सर्व प्रकारच्या माहिती स्रोतांमध्ये सुलभ आणि व्यापक प्रवेशाची सुविधा देते. लायब्ररीच्या कामकाजात कार्यक्षमता आणि परिणामकारकता वाढवण्यास मदत होते. लायब्ररीची उत्पादकता आणि प्रतिमा सुधारण्यास मदत करते.

लायब्ररी व्यवस्थापन सॉफ्टवेअर्स:

लायब्ररी विविध लायब्ररी दिनचर्या आणि प्रक्रिया व्यवस्थापित करण्यासाठी डिझाइन केलेले सॉफ्टवेअर वापरतात. यापैकी बहुतेक सॉफ्टवेअर्स एकात्मिक आहेत आणि लायब्ररीमध्ये विविध क्रियाकलाप किंवा कार्ये जसे की कॅटलॉगिंग, सांख्यिकी, संपादन प्रक्रिया, मालिका नियंत्रण इत्यादींसाठी मॉड्यूल आहेत. अशा सॉफ्टवेअरची काही उदाहरणे म्हणजे C-D-S-/I-S-I-S- ,G-L-A-S-, A-L-I-C-E- X & Lib and SLAM चा वापर युनिव्हर्सिटी लायब्ररी मध्ये केला जातो आणि याचा अर्थ (स्ट्रॅटेजिक लायब्ररी ऑटोमेशन मॅनेजमेंट) आहे.

ओ. पी. ए. सी.:

याचा अर्थ ऑनलाइन सार्वजनिक प्रवेश कॅटलॉग आहे आणि लायब्ररी कॅटलॉगची संगणकीकृत आवश्ती किंवा लायब्ररी होल्डिंग्सचा डेटाबेस आहे. मॅन्युअल पद्धतींपेक्षा ओ. पी. ए. सी चा फायदा म्हणजे वापर सोपा आहे आणि जागा वाचवते. हे स्थानिक इंट्रानेट, एक्स्ट्रानेट किंवा अगदी इंटरनेटवर लायब्ररीच्या कॅटलॉगमध्ये प्रवेश प्रदान करते.

ऑफिस ऑपरेशन्स:

आयसीटी द्वारे वर्ड प्रोसेसिंग, अकाउंटिंग, डेटाबेस मॅनेजमेंट आणि ई—मेलद्वारे संप्रेषण हे सर्व ऑफिस ऑपरेशन्स लायब्ररीमध्ये सक्षम आहेत.

नेटवर्किंग:

ग्रंथालयाचे वापरकर्ते विविध प्रकारच्या माहिती जसे की ऑनलाइन डेटाबेस, ई—जर्नल्स, ई—पुस्तके, सरकारी प्रकाशने नेटवर्क सिस्टमद्वारे डिजिटल पद्धतीने ॲक्सेस करू शकतात. इंटरनेट किंवा इंट्रानेटद्वारे दूरस्थपणे ऑनलाइन प्रवेशास अनुमती दिली जाऊ शकते.

इलेक्ट्रॉनिक दस्तऐवज वितरण:

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

ग्रंथालय वापरकर्त्यांना दस्तऐवज पाठवण्यासाठी किंवा आंतरलायब्ररी कर्ज देण्यासाठी पोस्टल सेवांवर अवलंबून राहू शकत नाहीत. लायब्ररी इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्कद्वारे दस्तऐवज पाठवतात जे विविध स्वरूपात दस्तऐवज वितरीत करू शकतात उदा. पी. डी. एफ. थेट वापरकर्त्यांच्या डेस्कटॉपवर.

वितरण प्रणाली:

पारंपारिक प्रणालीमध्ये वितरण प्रक्रिया खूप लांब असते आणि पुनरावृत्ती केलेल्या कामांमध्ये कर्मचारी तसेच ग्रंथपाल यांचा बराच वेळ खर्च होतो. संगणक, बारकोड स्कॅनर यांसारख्या तांत्रिक उपकरणांचा वापर आणि त्यातील सॉफ्टवेअर्सचा वापर या नियमित ऑपरेशन्स सहज आणि त्वरीत पार पाडण्यास मदत करतो. वितरण नियंत्रण प्रणालीच्या संगणकीकरणासाठी शैक्षणिक लायब्ररी हाताळण्यासाठी योग्य उमेदवार आहेत कारण त्यांच्या वारंवारतेमध्ये दररोज परिचालित व्यवहारांचे प्रमाण जास्त असते. रिकॉल नोटिस छापणे, कर्जाचे नूतनीकरण, दंड प्रसारित करणे, दंडाच्या नोटिसांची छपाई सारांश, आकडेवारीचे विश्लेषण , देय तारीख स्लिप छापणे, हरवलेल्या पुस्तकांसाठी आपोआप ऑर्डर तयार करणे आणि आंतर–ग्रंथालय देय व्यवहारांसाठी तरतूद.

आर्टिकल इंडेक्सिंग सिस्टीम:

आर्टिकल इंडेक्सिंग सिस्टम सुविधा विविध जर्नल्स, तांत्रिक अहवाल, कॉन्फरन्स प्रोसिडिंग्स, मोनोग्राफ इत्यादींमधून एखाद्या लेखाचे अनुक्रमणिका आणि ॲबस्ट्रॅक्टिंग करते. यात लेखाचे स्कॅनिंग, उद्धरण प्रविष्ट करणे आणि लेखक, कीवर्ड, ठेवीदार आणि अगदी ऑनलाइन शोध यांचा समावेश होतो त्याचप्रमणे शब्द–आधारित विनामूल्य शोध. ही प्रणाली नियतकालिक दस्तऐवजीकरण सूची, विशिष्ट विषयांवरील संदर्भग्रंथ इत्यादी देखील प्रदान करते.

मालिका नियंत्रण प्रणाली:

मालिकांमध्ये नियतकालिके, वर्तमानपत्रे, हस्तपुस्तिका, जर्नल्स, प्रक्रिया, व्यवहार इ. आणि मोनोग्राफिक मालिका यांचा समावेश होतो.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Vasundhara Arts & Science College GHATNANDUR

मालिका त्यांच्या चालू स्वभावामुळे मोनोग्राफ पेक्षा वेगळे आहेत. मालिका वर्गणीचे सतत स्वरूप समस्या निर्माण करते आणि ती एक जटिल प्रक्रिया बनवते ज्यासाठी स्वतंत्र नियंत्रण प्रणाली आवश्यक असते. स्वयंचलित मालिका नियंत्रण प्रणाली खालील फायदे प्रदान करते:

- नवीन जर्नल्स ऑर्डर करणे, नूतनीकरण, बंद करणे, स्मरणपत्रे पाठवणे जर्नल्स प्राप्त करणे. प्राप्त नियतकालिकांची यादी तयार करणे, रद्द नियतकालिक यादी तयार करणे, होल्डिंगची यादी तयार करणे, त्यांच्या स्थितीसह सूची धारण करणे (म्हणजे शेल्फवर, बंधनात, अभिसरणात इ.)
- बाइंडरी व्यवस्थापन रेकॉर्डिंग आणि बंधनकारक खंड जोडणे.
- बंधनकारक सबस्क्रिप्शन, इत्यादींवर खर्च केलेल्या रकमेचा मागोवा ठेवणे पुढील वर्षाच्या अर्थसंकल्पाचा अंदाज रेकॉर्डिंगसाठी हरवलेल्या मालिकांची घोषणा.

ऑनलाइन वापरकर्ता शिक्षण किंवा ट्यूटोरियल:

ग्रंथालय त्यांच्या वापरकर्त्यांना शिक्षित करण्यासाठी किंवा माहिती साक्षरता कार्यक्रम पार पाडण्यासाठी इंटरनेट वापरू शकतात. सर्वांसाठी वापरकर्ता शिक्षण अधिक सोयीस्कर बनवण्यासाठी व्हर्च्युअल टूर ऑनलाइन ऑफर केल्या जाऊ शकतात.

ई—संदर्भ सेवा:

काही सेवा जसे की एस. डी. आय. (माहितीचा निवडक प्रसार) किंवा वर्तमान जागरूकता सेवा (सी. एस. आय.) आणि आभासी संदर्भ डेस्क, नवीन अधिग्रहणांच्या घोषणा आणि इतर वाचक सल्लागार सेवा इंटरनेटद्वारे सुलभ केल्या जाऊ शकतात. वापरकर्ते संदर्भ स्टाफशी ऑनलाइन संवाद साधू शकतात.

लायब्ररी सहकार्य आणि संसाधनांची देवाणघेवाण:

केंद्रीय युनियन कॅटलॉग आयसीटी द्वारे अधिक चांगल्या प्रकारे व्यवस्थापित केले जाऊ शकते, अशा प्रकारे ग्रंथालये डिजिटल स्वरूपात ग्रंथसूची रेकॉर्ड आणि इतर माहिती संसाधने तयार आणि सामायिक करू शकतात.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

संस्थात्मक भांडार:

संस्थात्मक भांडार ही अशी प्रकाशने आहेत जी विद्यापीठ समुदायातून स्थानिक पातळीवर उगम पावतात जसे की प्रबंध, प्रबंध अहवाल, कॉन्फरन्स पेपर्स आणि सेमिनार पेपर्स. आयसीटीने केवळ या संसाधनांमध्ये उत्तम प्रवेश प्रदान करणे शक्य केले नाही तर संसाधनांचे संरक्षण सुनिश्चित करणे देखील शक्य केले आहे.

ई—लायब्ररी:

डिजिटल लायब्ररी सी. डी. रोम सारख्या डिजिटल फॉरमॅटवर रेकॉर्ड केलेल्या माहितीवर अवलंबून असतात. व्हर्च्युअल लायब्ररी ही लायब्ररी आहे जी भौतिक जागेत किंवा संरचनेत अस्तित्वात नसतात परंतु नेटवर्कद्वारे प्रवेश करता येतात. उदा. नायजेरियन व्हर्च्युअल लायब्ररी.

सोशल मीडिया नेटवर्क्स:

ट्विटर, फेसबॉक आणि लिंक्डइन सारखी सोशल मीडिया नेटवर्क, काही परस्परसंवादी इंटरनेट सेवा आहेत ज्या सध्या ग्रंथपालांसाठी आणि त्यांच्या वापरांसाठी संवाद मंच म्हणून काम करत आहेत. हे नेटवर्क शैक्षणिक वापरासाठी तैनात केले जाऊ शकतात. चर्चा गट, लिस्टर्सवर आणि समुदाय देखील ग्रंथालय सेवांना मदत करतात.

तंत्रज्ञान महत्वाची भूमिका बजावते:

माहितीच्या बदलत्या वातावरणात तंत्रज्ञान महत्त्वाची भूमिका बजावते आणि जीवनाची मूलभूत गरज बनते. माहितीची बहु—विषय वाढ प्रत्येक दस्तऐवज त्याच्या वापरकर्त्यासाठी आवश्यक बनवते. वाचनालयाला सर्व माहिती मिळणे अशक्य झाल्याने जगभरातून विविध स्वरूपात माहिती तयार केली जात आहे. ग्रंथालय ही सर्व माहिती आपल्या वापरकर्त्यांना प्रभावी ग्रंथालय सेवा आणि तंत्रज्ञानाच्या योग्य अंमलबजावणीद्वारे प्रदान करू शकते. लायब्ररी वापरकर्त्यांना त्यांच्या गरजेनुसार जर्नल्स, पाठ्यपुस्तके, ज्ञानकोश, वर्तमानपत्रे, वार्षिक पुस्तके इत्यादींद्वारे माहिती पुरवते, तसेच सीडी—रॉम, फ्लॉपी, डीव्हीडी, ऑनलाइन डेटाबेस इत्यादी सामग्री विविध स्वरूपांमध्ये उपलब्ध आहे.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Vasundhara Arts & Science College GHATNANDUR

निष्कर्ष :

आगामी काळात, जग एखाद्या कर्मचाऱ्याच्या वैयक्तिक कौशल्यापेक्षा तंत्रज्ञानावर अधिक अवलंबून असेल अशा प्रकारे माहिती संप्रेषण आणि तंत्रज्ञान टूल्सचा सर्वांना खूप फायदा होतो जेव्हा ते अधिक तपशीलवार आणि निर्दिष्ट माहिती प्रदान करतात, लोक जेंव्हा माहिती मिळविण्यासाठी संगणकावर संशोधन करू शकतात. तथापि, ही आयसीटी साधने चुकीच्या पद्धतीने वापरली जातात तेव्हा वापरकर्त्याचे मन व्यत्यय आणू शकते. आयसीटीमुळे लायब्ररीचे काम सोपे, जलद, स्वस्त आणि अधिक प्रभावी बनवते. हे माहिती व्यवस्थापित करण्यास मदत करते कारण संगणकीकृत प्रणालींमध्ये माहिती पुनर्प्राप्त करणे सोपे होते. संगणकीकरणामुळे जागा वाचते आणि कागदपत्रे कमी होतात. याने ग्रंथालय आणि माहिती विज्ञान व्यावसायिकांना मूल्यवर्धित सेवा प्रदान करण्यासाठी आणि उपलब्ध माहिती संसाधनांमध्ये अधिक दूरस्थ प्रवेश देण्यासाठी सहाय्य केले आहे. जनसहाय्यित ग्रंथालय आणि माहिती विज्ञान व्यावसायिकांना मूल्यवर्धित सेवा प्रदान करतात आणि उपलब्ध माहिती संसाधनांमध्ये अधिक दूरस्थ प्रवेश देतात. माहिती आणि संप्रेषण तंत्रज्ञान संचयित माहितीचे जलद पुनर्प्राप्ती प्रदान करते आणि आमच्या पारंपारिक लायब्ररीला आधुनिक लायब्ररीमध्ये सुधारित करते.

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

संदर्भ:

1) Innovative Library Services in ICT Era - Dr. Sandeep Bhavsar (Author), Dr. Sambhaji Patil. (56-59)

2) Application of ICT In Academic Library Services - M. Lokendro Singh (Author)

3) Sampath Kumar, B. T., & Biradar, B. S. (2010). Use of ICT in College Libraries in Karnataka, India: a Survey. Program: Electronic Library and Information Systems , 44 (3), 271 - 282.

4) Sampath Kumar, B. T., & Biradar, B. S. (2010). Use of ICT in College Libraries in Karnataka, India: a Survey. Program: Electronic Library and Information Systems , 44 (3), 271 - 282.

5) https://www.lisbdnetwork.com/areas-of-ict-application-in-libraries/

6) Vinitha K. (2006) Impact of Information and Communication Technology on Library and its services, DRTC-ICT conference on Digital Learning Environment, 2006, pp.I-7.

7) Watane Anjali, Vinchurkar A. W., and Choukhande Vaishali, (2005), Library Professionals' Computer Literacy and Use of Information Technology Application in College Libraries of Amaravati City, IASLIC Bulletin, 50(3), 131-41.

8) https://futalib.wordpress.com/2013/01/13/use-of-information-and-communication-technology-ict-in-the-library-library-automation/

❑❑❑

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

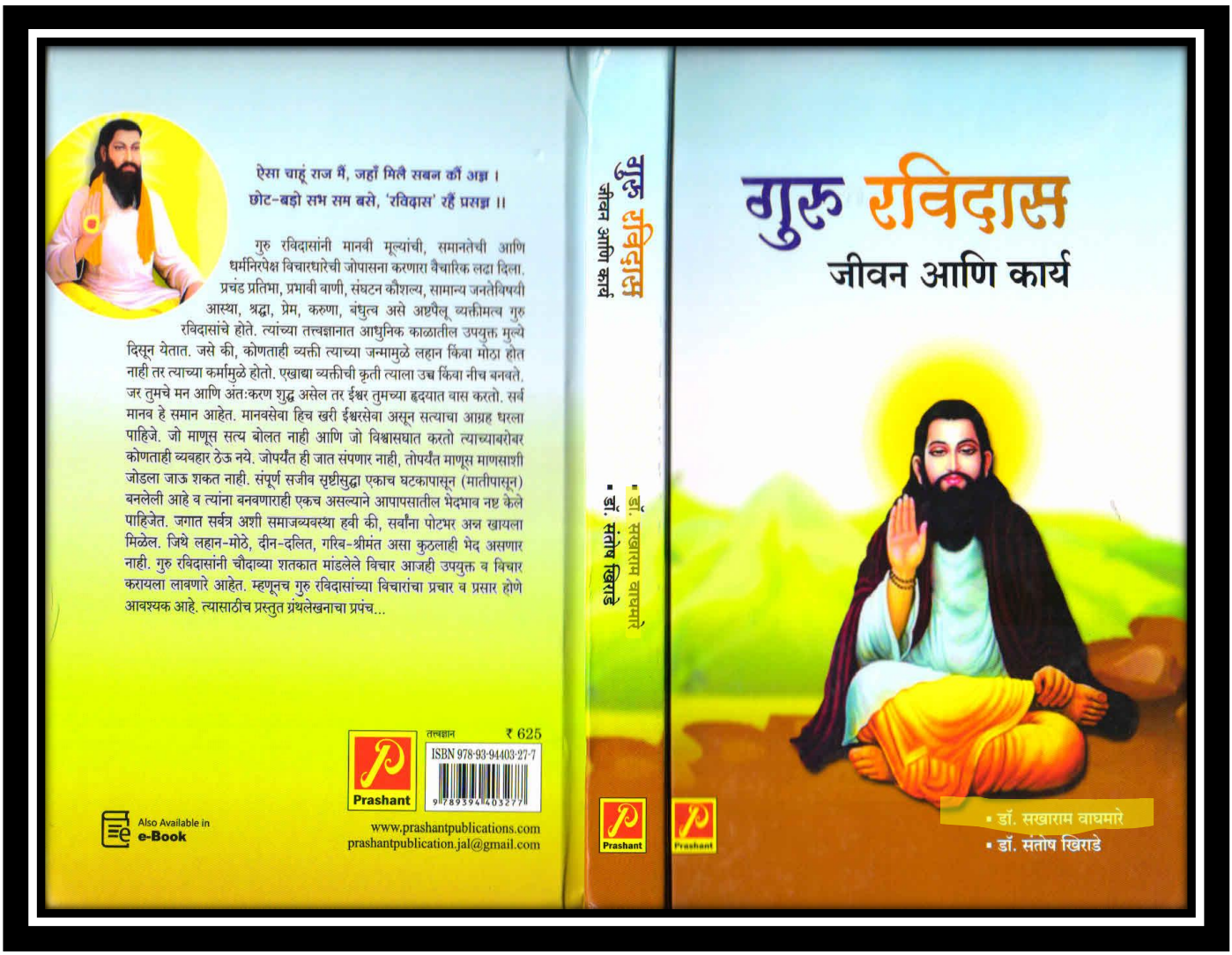

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

- **गुरु रविदासांच्या विचारातील जीवन मूल्य ९७**
  – डॉ. तुषार मधुकर माळी
- **गुरु रविदास यांच्या समाज प्रबोधनाची सद्यस्थितीला आवश्यकता : चिकित्सक अभ्यास १०३**
  – डॉ. दीपा अनिल पाटील
- **समतावादी विचाराचे प्रणेते : गुरु रविदास १०८**
  – प्रो. डॉ. रामदास वनारे, डॉ. पुंजाराम भगोरे,
- **ध्रुव तारा गुरु रविदास व सामाजिक अभिसरणे ११३**
  – इंजि. भाऊसाहेब नेवरेकर
- **मानवी कल्याणाचा विचार मांडणारे थोर क्रांतीकारक- गुरु रविदास.....१३०**
  – डॉ. सखाराम वाघमारे
- **गुरु रविदासांच्या कवितेतील मानवतावाद.....१३३**
  – डॉ. एस. एल. बिऱ्हाडे
- **क्रांतीकारी विचारवंत गुरु रविदास! १३९**
  – एस. टी. सोनुले
- **विद्रोही गुरु रविदास.....१४२**
  – डॉ. तोलमारे एस.एस.
- **क्रांतीकारी विचारवंत : गुरु रविदास १४७**
  – ह.भ.प. तुळशीराम राजाराम गवई
- **गुरु रविदास आणि त्यांच्या विचारांचे विश्लेषणाचा अभ्यास १५०**
  – डॉ. घोडके जितेंद्र विठ्ठलराव
- **क्रांतिकारी गुरु रविदासांचे मानवतावादी, समतावादी, परिवर्तनवादी व विज्ञानवादी विचार : आजच्या काळाची गरज.....१५५**
  – श्री. दिपक धोंडीराम भगुरे
- **गुरु रविदासांचे मानवतावादी विचार १५७**
  – प्रा. डॉ. नागोराव के. सोरे
- **गुरु रविदास.....१६२**
  – प्रा. गौतम निकम
- **गुरु रविदास यांचे समतावादी विचार : काळाची गरज १७३**
  – डॉ. अशोक कोलंबीकर

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

मानवी कल्याणाचा विचार मांडणारे थोर क्रांतीकारक–गुरु रविदास

– डॉ. सखाराम वाघमारे
भूगोलशास्त्र विभाग प्रमुख, संशोधक मार्गदर्शक,
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, ता. अंबाजोगाई जि. बीड

महान राष्ट्रीय संत गुरु रविदास महाराज यांच्या जन्माशी संबंधित कोणतीही निश्चित तारिख दिनांक उपलब्ध नसली तरी काही महत्वाचे पुरावे आणि वस्तुस्थितीच्या आधारे व महाराष्ट्र शासनाने आपल्या परिपत्रकात निश्चित केल्यानुसार थोर राष्ट्रीय संत गुरु रविदास महाराज यांचा जन्म माघ पोर्णिमेच्या सुमारास १३७६ मध्ये झाला असावा असे मानले जाते. जन्मतारीख व वर्ष याबाबतीत तज्ञांमध्ये एक वाक्यता आढळत नसली तरी त्यांच्या कार्य कर्तुत्वासंदर्भात मात्र कोणतेच दुमत नाही. काही अभ्यासक रविदासांचा जन्म वाराणसी जवळ तर काहीजण मांडूर येथे झाला असे मानतात. पण रविदास यांनी रैदास रामायनात लिहिल्यानुसार त्यांचे जन्मस्थळ मांडूर हेच असल्याचे सिध्द होते. रघु (संतोखदास) व कारसा (कालसा) देवी या दाम्पत्याच्या पोटी. माघ पोर्णिमेच्या दिवशी रविवारी रविदास नावाचे पुत्ररत्न जन्माला आले. ते सूर्यापमाणे तेजस्वी असल्याने त्यांचे नाव रविदास ठेवण्यात आले. पुढे हाच तेजस्वी पुत्र संपूर्ण भारतात संत रविदास या सुवर्ण अक्षरांनी कोरला गेला.

संत रविदास हे भारतातील असे एकमेव संत आहेत की, ज्यांना संपूर्ण भारतात रुईदास, रुयदास, रैदास, रविदास, रोहिदास या सारख्या विविध सोळा नावांनी ओळखले जाते. त्यांची स्मारके, पुतळे, त्यांच्या नावाच्या धर्मशाळा देशभर आहेत.

स्वामी रामानंद यांना संत रविदासांनी गुरु मानले होते. संत रविदासांच्या काळात जातीभेद शिगेला पोहचला होता. म्हणून संत रविदासांनी भारतभर भ्रमण करून स्वातंत्र्य, समता व बंधुत्वाचे धडे देत भारताला अध्यात्मिक व सामाजिक उंचीवर नेण्याचे महान कार्य केले. पण आज आधुनिक काळातही जाती व धर्मभेद कमी होताना दिसत नाही. प्राचीन काळाच्या तुलनेत तो जरी कमी असला तरी राजकिय व शासकिय पातळीवरून जातीभेद कायमचा नाहीसा करण्यासाठीची राजकारण्याची व सत्ताधाऱ्यांची मानसिकता बदलतांना दिसत नाही. तत्कालीन समाज व्यवस्थेतील शुद्र मानल्या जाणाऱ्या समाजाचा प्रत्येक घटक सुखी व्हावा. एकमेकांप्रती आदरभाव निर्माण व्हावा, सामाजिक व जातीय सलोखा निर्माण व्हावा यासाठी रविदासांनी आपल्या विचारांचा संपूर्ण भारतभर प्रचार आणि प्रसार केला. संत सेना, गुरु नानकजी, गुरु गोरखनाथ, संत नामदेव इ. महान संत गुरु रविदासांचे

समकालिन होते. समकालिन संत कबीर रविदासांचे गुरुबंधु होते. संत मार्गावरून चालण्यासाठी संत रविदासांनी केलेला उपदेश आजही अंगीकारण्यासारखाच आहे. भक्ती मार्गातून आलेले त्यांचे साहित्य आजही लोकांना मोठया प्रमाणावर प्रभावित करते. ज्यावेळी मुस्लिम आक्रमक भारतात शिरले. त्यावेळी त्यांनी लादलेला जिझियाकर, बळजबरीने धर्मांतर, मुल्ला-काझी भट-पुरोहित यांचे पुराणातील कर्मकांड, विषमता, शिक्षण बंदी, बेबंदशाही व पारतंत्र्याविषयी आणि देशात अगोदरच असलेल्या जाती-पाती व अंधश्रध्दे बाबत रोखठोक बोलतांना

हिममिल चलो जगत मे, फुट पडो दो नही ।
फूट पडी माची तो, देश नष्ट हो जाई ।।

असे विचार मांडले. यावरून संत रविदासांनी एकजुट आणि देश प्रेमाबाबत राष्ट्रहिताला किती महत्व दिले होते हे यावरून लक्षात येते.

गुरु रविदासांच्या विचारधारेत मानव हाच धर्मांचा केंद्र बिंदू असल्याने मानवसेवा हीच ईश्वर सेवा समजून मुर्ती पुजेच्या कर्मकांडावर कडाडून प्रहार केला होता. प्रत्येक व्यक्तीने आपल्यातील पराधिनतेला दूर करून आत्मसन्मानाने जगण्यासाठी निर्भय बनले पाहिजे म्हणून संत रविदासांनी

पराधिनता पाप है, जान लेहू रे मीन ।
रविदास दास पराधीन, तो कौन करे हैं प्रीत ।।

असा विचारही आपल्या साहित्यातून मांडला. गुलाम होणे हे पाप असल्याचा गुरुमंत्र ही सांगितला. संत रविदासांच्या साहित्यातील दोहे, कवितेतील, पदामधील भावार्थ हा कोणत्याही एका धर्मापुरता मर्यादित नव्हता. तर प्रत्येक जन माणसाला जगण्याची नवी दिशा देणारा होता. केवळ अन्नाची समस्या मिटली म्हणजे समानता आली असे होत नाही. तर लहान-थोर, गरीब-श्रीमंत, स्पृश्य-अस्पृश्य, यांच्यात समानता येण्यासाठी संत रविदासांनी जीवनभर मानवतावादाचा पुरस्कार केला.

स्वातंत्र्य, समता व बंधुत्वाची बीजे रोवत मानवी कल्याणासाठी समाजवादाची तुतारी फुंकणारे संत रविदास ''मन चंगा तो कठौती में गंगा'' असे म्हणत, चांगले कर्म करणाऱ्यांना घाबरण्याची गरज नाही. घाबरलात तर संपलात, गुलामी केलीत तर तुमच्यावर कोणी प्रेम करणार नाही. तेव्हा सामाजिक सलोखा राखून, एकोप्याने राहून, समाजाचा विकास साधायला हवा अशी शिकवण त्यांनी दिली. बहुतेक विद्वानांच्या मते शीख धर्माचे संस्थापक गुरु नानक देव यांच्याशी संत रविदासांची भेट झाली असावी असे मानले जाते. संत रविदासांच्या या कवितांचा/दोहे/पदांचा समावेश शिखांचा धर्मग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' यात आहे. संत रविदास हे जाती व्यवस्थेचे सर्वात मोठे विरोधक होते. हे त्यांनी पुढे मांडलेल्या विचारातून सिध्द

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

होते की, संत रविदास म्हणतात...

जाती जाती मे जाती है, तो केतन के पात ।

रैदास मनुष ना जुड सके, जब तक जाती न जात

अशा या विचारधारेतून संत रविदासांचा असा विश्वास होता कि, मनुवादी मानवाने निर्माण केलेल्या जाती-पातीमुळेच माणूस माणसापासून दुरावला जात आहे. त्यामुळे माणसात फूट पडून देशाचे मोठे नुकसान होते. तत्कालीन परिस्थितीत जातीभेद व वर्णभेदाच्या विरोधी लढाई लढत मानवी कल्याणासाठी आपली काया झिजविणाऱ्या या थोर समाज सुधारक, संत रविदासांचा मृत्यु १५२७ मध्ये राज्यस्थानातील उदयपूर जवळील चित्तोडगड येथे झाला. त्यांना विजयदास नावाचा एक पुत्र असल्याचेही सांगितले जाते. त्या बाबत अधिक माहिती उपलब्ध नसली तरी संत रविदासांच्या मानवी कल्याणाच्या विचारांनी प्रेरीत होऊन त्यावेळचे ५२ राजे संत रविदासांचे शिष्य झाले होते. उच्च कुळिन महान हिंदू संत, मीराबाई हयाही त्यापैकीच एक असून त्याही संत रविदासांच्या शिष्या झाल्या होत्या. एवढेच नाही तर मुगल साम्राज्याचा पहिला शासक बाबरही संत रविदासांचा शिष्य होता. तर भारतीय घटनेचे शिल्पकार, भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर संत रविदासाच्या विचारांनी प्रभावित होऊन त्यांनी आपला 'द अनटचेबल्स' हा ग्रंथ संत रविदासांच्या चरणी अर्पण केला होता. यावरूनच आपणास संत रविदासांच्या कार्याची कल्पना येते. परकीय विचारवंत फ्राईड लॅडर रविदासांबददल गौरवोदगार काढतांना म्हणतो की, 'रविदासांच्या मृत्युनंतरही त्याचे लिखाण भारतीय समाजात संघर्षाचे आहे. रविदासांचे जीवन विविध प्रकारच्या सामाजिक आणि आध्यात्मिक विषयांना अभिव्यक्त करण्याचे साधन आहे.' असे म्हणतो. तर संत मिराबाई रविदासांबदल गौरवोदगार काढतांना संत रविदासाचे दोहे 'मानवी जीवनाचे अनमोल धडे देतात' असे म्हणतात. संत दासुगण महाराज, महिपती, संत तुकाराम, संत एकनाथ, संत कबीर, नाभादास, गरीबदासजी ओशो रजनीश या सर्व महान संत समाज सुधारक विद्वांनानी रविदासांच्या कार्यावर प्रभावित होऊन विविध गौरवोदगार काढले आहेत.

संदर्भ ग्रंथसूची

१. https://www.dnyansagar.in
२. https://mr.m.wikipedia.org
३. https://www.lokmat.com
४. https://inmarathi.net
५. https://marathisky.com

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519